हम यीशु में विश्वास करते हैं

अध्याय 2

मसीह

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय.....1
जन्म और तैयारी.....2
देहधारण.....3
कुवाँरी से जन्म.....3
दाऊद का उत्तराधिकारी.....5
द्वितात्विक एकता.....6
बपतिस्मा.....9
मसीह के रूप में पुष्टि.....9
कार्य के लिए अभिषिक्त.....10
परिपूर्ण धार्मिकता.....10
परीक्षा.....11
आज्ञाकारिता.....12
सहानुभूति.....12
निष्कलंकता.....13
सार्वजनिक सेवकाई.....14
सुसमाचार.....15
राज्य.....15
पश्चाताप.....16
सामर्थ्य.....18
प्रमाणित पहचान.....18
निश्चित सफलता.....19
अभिपुष्टि.....20
प्रैरितिक अंगीकार.....20
रूपांतरण.....21
दुःखभोग और मृत्यु.....22
विजयी प्रवेश.....24
प्रभु भोज.....25
प्रायश्चित का बलिदान.....26
नई वाचा.....26
क्रूसीकरण.....27
दोषारोपण.....27

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दंड 29
ऊँचे पर उठाया जाना.. 30
पुनरूत्थान..31
छुटकारे की योजना.. 31
उद्धार की आशीषें 31
स्वर्गारोहण 32
प्रैरितिक अधिकार... 33
सिंहासन पर विराजमान होना 33
शासन 35
शब्द और आत्मा.. 36
मध्यस्थता 36
राज्य करना... 37
पुनरागमन..38
न्याय.. 38
नवीनीकरण.. 39
उपसंहार.. 41

हम यीशु में विश्वास करते हैं

अध्याय दो

मसीह

परिचय

आज संसार के बहुत सेअधिकांश भागों में लोगों के कम से कम दो नाम होते हैं। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि उनका एक पारिवारिक नाम हो जो उनकी किसी एक विशेष समूह से संबंधित होने की पहचान कराता हो, और एक दिया गया नाम हो जो उन्हें एक भिन्न व्यक्ति के रूप में पहचानता हो। इसलिए जब हम बच्चों को यीशु मसीह के बारे में सिखाते हैं, तो वे अक्सर यह अनुमान लगाते हैं कि "यीशु" उसका दिया हुआ नाम है और "मसीह" उसका पारिवारिक नाम है। वास्तव में कई बार बड़े लोग भी इस प्रकार की गलतफहमी में पड़ जाते हैं। परंतु यह हमें आश्चर्यचकित नहीं करना चाहिए। आखिरकार बाइबल भी कई बार "मसीह" शब्द का प्रयोग ऐसे करती है जैसे कि यह यीशु का नाम हो। परंतु वास्तविकता में, "मसीह" शब्द एक शीर्षक या पदवी है जो परमेश्वर के राज्य में यीशु की सेवकाई और सम्मान की पहचान कराती है।

यह हमारी श्रृंखला हम यीशु में विश्वास करते हैं का दूसरा अध्याय है। और हमने इसका शीर्षक "मसीह" दिया है। इस अध्याय में हमारी रणनीति यीशु के जीवन की उन घटनाओं और उसके विशेष गुणों पर ध्यान केंद्रित होगी जो यह स्पष्ट करने में सहायता करते हैं कि कि उसके लिए मसीह होने का क्या अर्थ है।

"मसीह" शब्द का साधारण अर्थ है एक अभिषिक्त जन। यह नए नियम के यूनानी शब्द ख्रिस्तोस का अनुवाद है, जो स्वयं पुराने नियम के इब्रानी शब्द मशिआख या मसीहा का अनुवाद है।

बहुत से लोग यह जान कर आश्चर्यचकित हो जाते हैं कि बाइबल शब्द "मसीह" या "अभिषिक्त जन" का प्रयोग केवल यीशु के लिए ही नहीं करती है। यह वास्तव में पुराने नियम का एक काफी सामान्य शब्द है, जो उन लोगों को दर्शाता है जिनका तेल के साथ अभिषेक करके परमेश्वर के विशेष सेवकों के रूप में चिन्हित किया जाता था। पुराने नियम के इतिहास के कुछ चरणों में एक सामान्य भाव में सभी भविष्यद्वक्ताओं, याजकों और राजाओं को "अभिषिक्त जन" कहा जा सकता था।

उदाहरण के लिए पुराने नियम के शब्द "मसीह" या "ख्रिस्त" का एक सबसे महत्वपूर्ण अर्थ दाऊद के वंश या संतान से संबंधित है जिन्होंने इस्राएल और यहूदा पर राजाओं के रूप में सेवा की थी। हम इसे 2 इतिहास 6:42; भजन 89:38-39, और पद 51; और भजन 132:10,17 जैसे स्थानों में पाते हैं।

परंतु पुराने नियम के कई भागों भी ने इस संभावना को भी उत्पन्न किया कि एक बहुत ही विशेष अभिषिक्त जन भविष्य में आने वाला था। वह इन सारी भूमिकाओं को अद्वितीय रूप में पूर्ण करेगा, और संसार में परमेश्वर के उद्धार के सारे उद्देश्यों को पूरा करेगा। और यह व्यक्ति यहूदी लोगों में सामान्य तौर पर मसीहा या ख्रिस्त के रूप में जाना गया। और निःसंदेह, सारे संसार के मसीही जानते हैं कि यीशु ही महान मसीहा, अर्थात् परम अभिषिक्त जन, ख्रिस्त था।

यीशु मसीह के बारे में हमारा विचार विमर्श चार भागों में विभाजित होगा। पहला, हम उसके जन्म से लेकर मसीह होने की भूमिका के लिए उसकी तैयारी की कुछ घटनाओं के धर्मवैज्ञानिक महत्व को देखेंगे। दूसरा, हम उसके मसीह होने के रूप में उसकी सार्वजनिक सेवकाई की जाँच करेंगे। तीसरा, हम उसके दु:खभोग और मृत्यु की जाँच करेंगे। और चौथा, हम उन घटनाओं की खोज करेंगे जो मसीह के रूप में उसके महिमान्वित होने को दर्शाती हैं। आइए यीशु के जन्म और तैयारी के साथ आरंभ करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जन्म और तैयारी

इस अध्याय में हम यीशु के जन्म और मसीहारुपी सेवा के लिए उसकी तैयारी का वर्णन करेंगे, यह समय भावी जन्म की घोषणा से आरंभ होकर जंगल में होने वाली उसकी परीक्षाओं में विजयी होते हुए वापस लौटने तक चलता है। हम उसके जीवन के इस समय की कई घटनाओं को गहराई से देखेंगे, परंतु पहले हम जल्दी से उस पूरी अवधि को संक्षेप में देख लें।

यीशु के जन्म से पहले स्वर्गदूतों ने उसके जन्म की घोषणा उसकी कुवाँरी माता मरियम और उसके मंगेतर यूसुफ के समक्ष कर दी थी। जिब्राएल स्वर्गदूत ने लूका 1:26-38 में मरियम से यीशु के जन्म की भविष्यवाणी की थी। और मत्ती 1:20-21 में प्रभु के एक स्वर्गदूत ने ऐसा ही एक संदेश उसके मंगेतर यूसुफ को दिया। यूसुफ और मरियम इस्राएल देश में रहते थे, जो रोमी साम्राज्य का एक हिस्सा था। और जब मरियम गर्भवती हो चुकी थी तो उसके कुछ समय बादमरियम की गर्भावस्था के अंतिम दिनों में अगस्तुस कैसर की आज्ञा के अनुसार यूसुफ और मरियम को अपना नाम चुंगी देने के लिए पंजीकृत करने हेतु बैतलहम में आना पड़ा। हम इसके बारे में लूका 2:1-5 में पढ़ते हैं।

लूका 2:6-20 के अनुसार यीशु का जन्म बैतलहम में रहने के इन दिनों में हुआ। उसके जन्म की घोषणा स्वर्गदूतों के द्वारा निकट के चरवाहों से की गई जो उसे देखने आए और फिर जो कुछ उन्होंने सुना था, उसका समाचार फैला दिया। लूका द्वारा उल्लिखित राजनैतिक शासकों और समकालीन घटनाओं और बाइबल से बाहर के इतिहास पर आधारित होकर इतिहासकारों ने सामान्यतः यह अनुमान लगाया है कि यीशु का जन्म लगभग 4 ई. पू. में हुआ था।

बाइबल यीशु के आरंभिक जीवन की बहुत सी घटनाओं का वर्णन नहीं करती, परंतु लूका 2:21 कहता है कि उसके जन्म के आठवें दिन उसका नामकरण और खतना हुआ। साथ ही, जब यीशु मंदिर में प्रस्तुत किया गया तो परमेश्वर के दो विश्वासयोग्य सेवकों, शमौन और हन्नाह ने उसे बहुप्रतीक्षित मसीह के रूप में पहचान लिया, जैसा कि हम लूका 2:22-40 में पढ़ते हैं। और पूर्व के ज्योतिषियों ने उसे यहूदियों के राजा के रूप में पहचाना, जिसका जन्म तारों के अलौलिक गतिविधियों से चिन्हित हुआ था, जैसा कि हम मत्ती 2:1-12 में पढ़ते हैं।

यीशु लंबे समय तक इस्राएल में नहीं रहा। जब यहूदियों के राजा हेरोदेस महान ने ज्योतिषियों से सुना कि यहूदियों के नए राजा का जन्म हो चुका है, तो वह इस नवजात मसीहा को मार डालना चाहता था। इसलिए उसने बैतलहम क्षेत्र के दो साल की आयु तक के सभी लड़कों को मार डालने का आदेश दिया। परंतु प्रभु ने यूसुफ को इस बात की चेतावनी दे दी, और वह अपने परिवार को लेकर मिस्र को भाग गया। जब हेरोदेस मर गया तो यह परिवार इस्राएल वापस आ गया। परंतु परमेश्वर से एक और चेतावनी के प्रत्युत्तर में यूसुफ नासरत नाम के एक छोटे से नगर में बस गया जो यहूदियों के नए राजा, हेरोदेस के पुत्र अरखिलाउस से बहुत दूर था। ये विवरण मत्ती 2:13-23 में पाए जाते हैं।

जब यीशु बड़ा हुआ तो उसके परिवार ने यरूशलेम में यहूदियों के वार्षिक त्यौहारों में भाग लिया। और लूका 2:41-52 के अनुसार, ऐसी ही एक यात्रा में जब यीशु की आयु बारह वर्ष की थी, तो उसने धार्मिक अगुवों और शिक्षकों को अपने ज्ञान और बुद्धि से बहुत प्रभावित किया।

जब यीशु लगभग 30 साल का था तो उसने अपने आपको सार्वजनिक सेवकाई के लिए तैयार करना आरंभ किया। पहले, उसने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बपतिस्मा लिया, जैसा कि हम मत्ती 3:13-17, मरकुस 1:9-11, और लूका 3:21-23 में पढ़ते हैं।

फिर, बपतिस्मा के ठीक बाद यीशु ने चालीस दिन तक जंगल में उपवास रखा, जैसा कि हम मत्ती 4:1-11, मरकुस 1:12-13, और लूका 4:1-13 में पढ़ते हैं। अपनी सार्वजनिक सेवकाई को आरंभ करने से पहले उसने इस समय के दौरान शैतान की परीक्षाओं का सामना किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यद्यपि यीशु के जन्म और तैयारी के बीच के समय के बारे में हम बहुत सी बातें कह सकते हैं, फिर भी हम केवल तीन घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे : उसका देहधारण, उसका बपतिस्मा और उसकी परीक्षा। आइए सबसे पहले यीशु के देहधारण को देखें।

देहधारण

धर्मवैज्ञानिक शब्द देहधारण यीशु द्वारा स्थाई रूप से मानवीय स्वभाव, जिसमें मानवीय देह और मानवीय आत्मा भी शामिल है, को प्राप्त करने को दर्शाता है। पवित्रशास्त्र कई स्थानों पर देहधारण के बारे में बात करता है, जैसे यूहन्ना 1:1, 14; फिलिप्पियों 2:6-7; और इब्रानियों 2:14-17।

इस अध्याय में, हम कुवाँरी से उसके जन्म, दाऊद का वारिस होने के उसके पद, और उसके ईश्वरीय और मानवीय स्वभावों की द्वितात्विक एकता को देखने के द्वारा यीशु के देहधारण के धर्मवैज्ञानिक महत्व पर ध्यान केंद्रित करेंगे। आइए कुवाँरी से उसके जन्म के साथ आरंभ करें।

कुवाँरी से जन्म

यीशु की माता मरियम एक कुवाँरी थी जब उसने गर्भधारण किया, उसे पोषित किया और यीशु को जन्म दिया। उसने पवित्र आत्मा के चमत्कारिक हस्तक्षेप के द्वारा उसे गर्भ में धारण किया, और वह तब तक कुवाँरी रही जब तक कि उसने यीशु को जन्म नहीं दे दिया। इन वास्तविकताओं की शिक्षा स्पष्ट रूप में मत्ती 1:18-25 और लूका 1:26-38 में दी गई है।

यीशु के कुवाँरी से जन्म के कम से कम तीन महत्वपूर्ण आशय हैं। पहला, क्योंकि यीशु एक स्त्री से पैदा हुआ, इसलिए वह एक सच्चा मनुष्य है।

उत्पत्ति 1:21-28 जैसे अनुच्छेदों के अनुसार परमेश्वर की मौलिक व्यवस्था यह थी कि उसकी सृष्टि किए गए प्राणी अपनी अपनी जाति के अनुसार संतान उत्पन्न करें। इस वास्तविकता का एक विशेष परिणाम यह है कि मानवीय स्त्रियाँ हमेशा मानवीय बच्चों को ही जन्म देती हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि यीशु का उसकी माता के गर्भ में वैसे ही विकास हुआ जैसे प्रत्येक मानवीय बच्चे का होता है, जिससे उसे एक देह और आत्मा के साथ एक सच्चा मानवीय स्वभाव मिला।

325 से 389 ईस्वी तक रहे कोंस्टेन्टिनोपल के बिशप नाजीआंजोस के ग्रेगरी ने अपने पत्र 51 में यीशु के सच्चे मनुष्यत्व के महत्व के बारे में लिखा है। सुनिए उसने क्या कहा :

> क्योंकि जो उसने पूर्वधारण नहीं किया, उसे उसने चंगा नहीं किया...यदि केवल आधा आदम ही पाप में गिरा, तो जो मसीह पूर्वधारण करता है और जिसे बचाता है वह भी केवल आधा ही होगा; पर यदि [आदम का] पूरा स्वभाव पाप में गिरा, तो इसे उस मसीह के पूरे स्वभाव के साथ एकजुट होना चाहिए, और जिससे यह संपूर्ण रूप से बच जाए। इसलिए फिर वे हमारे संपूर्ण उद्धार के कारण हमसे डाह न करें, या फिर उद्धारकर्ता को केवल मात्र हड्डियों और नसों और मनुष्यत्व के साथ चित्रित न करें।

इब्रानियों 2:17 का उल्लेख करते हुए ग्रेगरी ने यह पहचाना कि मनुष्यों के उद्धार के कार्य में एक ऐसे उद्धारकर्ता की आवश्यकता है जो हमारे समान मनुष्यत्व की पूर्णता में हो।

दूसरा, क्योंकि यीशु चमत्कारिक रूप से पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में आया, इसलिए उसका मानवीय स्वभाव पाप के द्वारा बिलकुल भी भ्रष्ट नहीं था। रोमियों 5:12-19 के अनुसार सारे मनुष्य आदम के पहले पाप के दोष को ढोते हैं। और रोमियों 7:5-24 के अनुसार हम भी उसी पाप के द्वारा भ्रष्ट हो गए हैं, और यह हममें वास करता है। परंतु बाइबल बिल्कुल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि यीशु बिना किसी

पाप के उत्पन्न हुआ। हम इसे 2 कुरिन्थियों 5:21 और 1 यूहन्ना 3:5 में देखते हैं, और यह लूका 1:35 में यीशु के जन्म की घोषणा में भी निहित है। यद्यपि धर्मविज्ञानियों ने सदैव यह पहचाना है कि इसमें कोई रहस्य अवश्य है कि कैसे यीशु मानवीय माता के द्वारा जन्म लेने के बावजूद भी दोष और पाप की भ्रष्टता से बचा रहा, फिर भी अधिकांश इससे सहमत हैं कि कुवाँरी से उसका जन्म बिलकुल सटीकता से परमेश्वर की अलौकिक रूप से संभालने वाली उपस्थिति और सुरक्षा की ओर संकेत करता है जिसके द्वारा यह सब पूरा हुआ।

> यीशु के लिए पापरहित होना महत्वपूर्ण था क्योंकि यीशु पापियों को छुटकारा देने के लिए आ रहा था, और इसलिए संपूर्ण प्रारूप विज्ञान, उदाहरण के तौर पर पुराने नियम की बलिदान प्रणाली, यह अपेक्षा करते हुए कि जिन जानवरों को बलिदान के लिए लाया जाता है वे बिना किसी दोष के, बिना किसी कमी के हों, इस बात की आवश्यकता पर बल देता है कि जब यीशु स्वयं हमारे स्थान पर अपना बलिदान देने को आए तो वह बिना किसी पाप के और निर्दोष हो। वह जो पापियों के लिए बलिदान देने के लिए आ रहा है, वह स्वयं भी पापरहित हो।
>
> — डॉ. राबर्ट लिस्टर

> पुराने नियम के प्रतिस्थापन्न के बलिदान के रूपक को पूरा करने के लिए, बलिदान अपने आप में पापरहित या सिद्ध होना चाहिए। मैं सोचता हूँ कि हम कल्पना कर सकते हैं कि यदि मसीह किसी भी तरह से हमारे पाप से भरे हुए स्वभाव में सहभागी होता और पाप के व्यवहार में बना रहता, तो उसे स्वयं को ही एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती कि वह परमेश्वर की दृष्टि में उसका स्थान ले। परंतु यह उसकी पापरहितता थी जिसने उसे एक जरूरतमंद लोगों के सहायक होने के योग्य बनाया। अन्य दृष्टिकोण - जो कि इसका विरोधाभासी नहीं है परंतु इसका संपूरक है - यीशु को दूसरा आदम मानने की समझ है, वह जिसने वहाँ उचित कार्य किया जहाँ पहला आदम असफल हो गया। जहाँ आदम एक सिद्ध आज्ञाकारिता से भरा जीवन प्रदान करने असफल रहा, वहीं यीशु ने उसे पूर्ण किया। इसलिए चाहे आप इसे उसके दूसरा आदम बनने के रूप में देखें या फिर पाप के लिए सिद्ध और पर्याप्त बलिदान बनने के रूप में, मसीह की पापरहितता बहुत महत्वपूर्ण है और मसीहा के सुसमाचार का बहुत महत्वपूर्ण पहलू है।
>
> — डॉ. ग्लेन स्कोर्गी

यीशु के कुवाँरी से गर्भधारण और जन्म लेने का तीसरा आशय यह है कि वह वास्तव में प्रतिज्ञात मसीहा है, जिसे उसके लोगों को पाप और मृत्यु से छुड़ाने के लिए भेजा गया था। मत्ती 1:21, में यूसुफ ने भविष्यवाणी को स्वप्न में प्राप्त किया :

> वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा (मत्ती 1:21)।

और मत्ती 1:22-23 में मत्ती ने इस भविष्यवाणी का अनुवाद इस प्रकार किया :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> यह सब इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो: "देखो, एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा," जिसका अर्थ है - "परमेश्वर हमारे साथ" (1:22-23)।

इस व्याख्या में, मत्ती ने यशायाह 7:14 को उद्धृत किया, और संकेत किया कि क्योंकि यीशु के जन्म ने इस भविष्यवाणी को पूरा किया, इसलिए इस बात ने प्रमाणित किया कि वही मसीह था।

कुछ सुसमाचारिक विद्वान मानते हैं कि कुवाँरी से जन्म लेने की यशायाह की भविष्यवाणी ने प्रत्यक्ष रूप से यीशु को दर्शाया। अन्य मानते हैं कि इसने प्रतीकात्मक रूप से यीशु की ओर संकेत किया। परंतु सभी सुसमाचारिक लोग सहमत हैं कि पवित्र आत्मा ने आश्चर्यजनक रूप से मरियम को गर्भधारण करवाया, और यीशु का कुवाँरी से जन्म प्रमाणित करता है कि वही भविष्यवाणी किया हुआ मसीहा है, जिसके द्वारा परमेश्वर अपने लोगों को पाप और मृत्यु से बचाएगा।

यीशु के देहधारण को उसके कुवाँरी से जन्म लेने के आधार पर देख लेने के बाद, आइए अब हम दाऊद के उत्तराधिकारी होने के उसके पद की ओर मुड़ें।

दाऊद का उत्तराधिकारी

> मत्ती 1 में, मत्ती यीशु की वंशावली का आरंभ यह दिखाते हुए करता है कि कैसे वह अब्राहम का पुत्र, दाऊद का पुत्र है। और यह मत्ती के लिए वास्तव में महत्वपूर्ण है। इसका कारण यह है कि पुराने नियम में, राजा दाऊद के समय में परमेश्वर ने प्रभावशाली रूप से अपने राज्य के प्रारूप को स्थापित किया था कि कैसे उसका शासन इस संसार में क्रियान्वित होगा। और दाऊद उस शासन का एक अच्छा प्रतीक, एक नमूना था जिसकी इच्छा परमेश्वर कर रहा था, अर्थात् परमेश्वर के लोगों पर परमेश्वर के स्थान में परमेश्वर का शासन। और इसलिए पुराने नियम में पहले से ही इस प्रारूप को बना देने के साथ यह वास्तव में महत्वपूर्ण है कि यीशु आए और इस प्रारूप को पूरा करे। इसलिए यह एक बहुत महत्वपूर्ण कारण है। अन्य कारण पुराने नियम की एक पुस्तक 2 शमूएल 7 में मिलता है जहाँ दाऊद को एक प्रतिज्ञा दी गई है कि कोई उसकी गद्दी पर हमेशा के लिए विराजमान रहेगा और यह वही होगा जो परमेश्वर के राजसी शासन को स्थापित करेगा। और एक भाव में वह प्रतिज्ञा वास्तव में टूट गई जब प्राचीन इस्राएल में शासन करने के लिए राजा ही नहीं रहे, लगभग पाँच सौ, छः सौ साल तक कोई राजा नहीं था। और फिर यीशु आता है, और हम सुसमाचारों में पढ़ते हैं कि यही वह है जो अब दाऊद के सिंहासन पर विराजमान है। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि मसीह जब आया तो दाऊद के वंश से ही आया।
>
> — डॉ. पीटर वॉकर

यह पहचान लेना महत्वपूर्ण है कि यीशु दाऊद का उत्तराधिकारी था क्योंकि यही उसको मसीहा या मसीह होने का वैधानिक अधिकार देता है। ई. पू. 10वीं शताब्दी में परमेश्वर ने दाऊद के साथ एक वाचा वाँधीबाँधी, जिसमें उसने प्रतिज्ञा की कि वह दाऊद के किसी एक वंश के राजत्व के अधीन पृथ्वी पर एक स्थिर राज्य की स्थापना करेगा। हम इस वाचा का उल्लेख 2 शमूएल 7 और 1 इतिहास 17 में पाते हैं।

दाऊद का राज्य उसके पुत्र सुलैमान की मृत्यु के बाद विभाजित हो गया। परंतु पुराने नियम ने पहले से ही बता दिया था कि दाऊद के वंश से आने वाला भावी राजा, जिसे "मसीहा" या "मसीह" के रूप में जाना जाता है, अंत में राज्य को पुनर्स्थापित करेगा। हम उसके बारे में भजन 89:3-4, भजन 110:1-

7, और भजन 132:17 में पढ़ते हैं। वह दाऊद के राज्य का नवीनीकरण करेगा और बंदियों को प्रतिज्ञा की हुई भूमि में वापस ले आएगा। और वह पुनर्स्थापित राष्ट्र में परमेश्वर की महान आशीषों को लेकर आएगा। इन प्रतिज्ञाओं को कई स्थानों में देखा जा सकता है, जैसे यिर्मयाह 23, 30 और 33, साथ ही यहेजकेल 34:20-31, और 37:20-28 में। इसीलिए मत्ती 1 और लूका 3 में यीशु की वंशावलियाँ इस बात को दर्शाती हैं कि वह दाऊद के वंश से आया। उनका अभिप्राय यह दिखाना था कि यीशु के पास मसीहा या मसीह होने का वैधानिक दावा था।

यीशु के कुवाँरी से जन्म और दाऊद के उत्तराधिकारी होने के उसके पद की जाँच कर लेने के बाद, हम उसकी द्वितात्विक एकता को संबोधित करने के लिए तैयार हैं।

द्वितात्विक एकता

तकनीकी शब्द "द्वितात्विक एकता" इस वास्तविकता को दर्शाता है कि :

> यीशु दो विभिन्न स्वभावों (एक ईश्वरीय स्वभाव और एक मानवीय स्वभाव) के साथ एक व्यक्तित्व है जिसका प्रत्येक स्वभाव उसकी अपनी ही विशेषताओं को रखता है।

यीशु त्रिएकता का दूसरा व्यक्तित्व है। पूरे अनंतकाल से उसने इसके सारे गुणों के साथ संपूर्ण ईश्वरत्व को रखा है। और जब वह गर्भ में आया और एक मनुष्य के रूप में जन्म लिया, तो उसने अपने व्यक्तित्व में एक सच्चे मानवीय स्वभाव को जोड़ दिया, जिसमें एक मनुष्य के सारे आवश्यक गुण शामिल थे।

451 ईस्वी में एकत्र हुई चाल्सीदोन की सार्वभौमिक महासभा ने द्वितात्विक एकता के बारे में बाइबल की शिक्षा को एक वाक्य में सारगर्भित किया जिसे विविध तरीके से चाल्सीदोन का विश्वास कथन, चाल्सीदोन प्रतीक और चाल्सीदोन की परिभाषा आदि के नाम से पुकारा जाता है। उसमें से लिए गए इस भाग को सुनिए :

> हमारा प्रभु यीशु मसीह परमेश्वरत्व में सिद्ध है और साथ ही मनुष्यत्व में भी; वह सच्चा परमेश्वर और सच्चा मनुष्य है, सच्ची आत्मा और सच्ची देह के साथ . . . सब बातों में हमारे समान, पापरहित . . . दो स्वभावों के साथ, व्यवस्थित, अपरिवर्तनीय, अविभाज्य, अवियोज्य; स्वभावों की भिन्नता किसी भी तरह से एकता के कारण हटाई नहीं गई है, बल्कि प्रत्येक स्वभाव के गुण सुरक्षित रखे गए हैं और एक व्यक्ति और एक अस्तित्व में जुड़ जाते हैं।

यह परिभाषा सांकेतिक है, परंतु हमारे उद्देश्यों के लिए, हम इसे तीन भागों में सारगर्भित कर सकते हैं। पहला, यह कहता है कि यीशु में दो स्वभाव हैं, अर्थात् एक ईश्वरीय स्वभाव और एक मानवीय स्वभाव।

> द्वितात्विक एकता में हम एक स्वभाव की बात करते हैं। हम कहते हैं दो स्वभाव और एक व्यक्ति और एक व्यक्ति में दो स्वभाव एकजुट हो गए हैं। "स्वभाव" से हमारा अर्थ है कि यही विषय है, वस्तु है, मुख्य अवयव है, उसके मानवीय स्वभाव का तत्व है और साथ ही एक भिन्न स्वभाव, उसका ईश्वरीय स्वभाव। इसलिए मानवीय स्वभाव दो सामान्य तत्वों को सम्मिलित करने जा रहा है, एक शरीर और एक आत्मा, या एक आत्मिक और एक भौतिक तत्व और यह एक तरह का संपूर्ण अस्तित्व है जो आपके पास होना ही चाहिए यदि आप एक मनुष्य के रूप में जीवन जीना चाहते हैं। और तब ईश्वरीय स्वभाव सब बातें, सारा

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> सामर्थ्य अर्थात् परमेश्वर का तत्व या सार होगा। और जब हम यह कहते हैं कि शब्द स्वभाव, तो हम कह रहे हैं कि यीशु के पास दोनों तरह का अस्तित्व, अस्तित्व के दोनों प्रकार, जीवन के दोनों प्रकार हैं। और इस तरह से वह पूर्ण मनुष्य है, एक सौ प्रतिशत मनुष्य और उसका स्वभाव मात्र वह छाप है कि यह कहा जा सके कि उसके पास वह सब कुछ है जो एक पूर्ण मनुष्य होने में आवश्यक होती हैं। ईश्वरीय स्वभाव, उसमें वे सब बातें हैं जो एक ईश्वरत्व या ईश्वरीय व्यक्तित्व में होनी आवश्यक हैं।
>
> — डॉ. जॉन मैकिनले

परमेश्वर के अनंत पुत्र के पास वे गुण हैं और सदा रहेंगे जो परमेश्वर होने के लिए जरूरी है। उदाहरण के लिए, वह अपने अस्तित्व, बुद्धि और सामर्थ्य में असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय है। फलस्वरूप, जो कुछ भी पुराना नियम परमेश्वर के स्वभाव के बारे में कहता है, वह यीशु के बारे में भी सत्य है। हम इसे यूहन्ना 1:1-3, और 10:30, और इब्रानियों 1:2-3 जैसे अनुच्छेदों में प्रकट होता देखते हैं। इसका अर्थ है कि यीशु पूरी तरह से सिद्ध मसीह है। वह हमेशा परमेश्वर की इच्छा को पूरा करता है, और वह पूर्णतया सच्चा है। वह अपनी प्रतिज्ञा को कभी वापस नहीं लेगा, और न ही उसे पूरा करने में असफल होगा। और जब वह हमारे लिए क्रूस पर मरा तो उसकी मूलभूत सिद्धताओं ने उसे एक अनंत बहुमूल्य बलिदान के रूप में सुरक्षित रखा।

इसके साथ-साथ, यीशु के पास वह प्रत्येक गुण भी है जो मनुष्यों के पास होना आवश्यक है, जैसे कि एक भौतिक शरीर और एक आत्मा। इसलिए ही वह कमजोरी, चोट और मृत्यु के अधीन था; और इसीलिए उसमें सामान्य भौतिक सीमितताएँ और ऐसी ही अन्य बातें थीं। हम यीशु के संपूर्ण मनुष्यत्व के बारे में इब्रानियों 2:14, 17 और 4:15; और फिलिप्पियों 2:5-7 जैसे अनुच्छेदों में पढ़ते हैं। और उसका मानवीय स्वभाव उसके मसीह होने की भूमिका में महत्वपूर्ण है। इसी बात ने ही उसे दाऊद का उत्तराधिकारी होने, और भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा जैसे मानवीय पदों को लेने के योग्य बनाया। और जैसा कि हम इब्रानियों 2:14-17 में पढ़ते हैं, इसी ने ही उसे इस योग्य बनाया कि हमारा स्थान ले, जब उसने हमारे बदले मृत्यु सही, क्योंकि केवल वास्तविक मानवीय मृत्यु ही मनुष्यों के लिए पापों का बलिदान बन सकती थी।

> और देहधारण में, परमेश्वर, जो अनंतता से पुत्र को चला रहा है, ऐसे समय पर मरियम को अपने अधिकार में ले लेता है और पवित्र आत्मा उसमें हमारे मानवीय स्वभाव को गर्भधारित करता है। इसलिए हमारे पास वह सब कुछ है जो हमें मनुष्यजाति के साथ संबंधित कराता है, वह सब है जो परमेश्वर द्वारा हमें अपने स्वरूप के लोग बनाने के लिए आवश्यक है। यीशु में ऐसा स्नेह था जो मानवीय था; उसमें ऐसा मन था जो मानवीय था; उसने अपने निर्णय उसी प्रकार लिए जैसे मनुष्य सब बातों पर आधारित होकर अपने निर्णय लेता है। जैसा एडवर्ड्स ने कहा, "समझ का अंतिम आदेश" वह था जो उसने अंत में दिया। इसलिए वह सब कुछ जो मनुष्य होने के नाते हमारे अस्तित्व और हमारे कार्यों से संबंधित है, यीशु ने वह सब कुछ अपने ऊपर ले लिया। परंतु इसके साथ-साथ रहस्यात्मक रूप से चाहे उसने स्वयं को अपनी महिमा के बाहरी प्रकटीकरण से जो उसकी पिता के साथ थी, शून्य कर दिया, फिर भी उसने स्वयं को परमेश्वर के पुत्र होने के रूप में अपने अनंत अस्तित्व के किसी भी मुख्य गुण से शून्य नहीं किया। वह फिर भी सर्वसामर्थी था। वह फिर भी सर्वज्ञानी था। वह फिर भी पवित्रता में अपरिवर्तनीय

> था। उसे परमेश्वर के पुत्र होने के रूप में फिर भी यह जानकारी थी कि छुटकारे का कार्य क्यों हो रहा था। और इसलिए, ये सब बातें जो उसके अनंत ईश्वरत्व का एक भाग थीं, उसने उनमें से किसी को भी नहीं त्यागा था . . . इसलिए जब हम उसके उन स्वभावों के बारे में प्रश्न पूछते हैं जो उसके द्वितात्विक एकता में थे, तो जिसकी हमने पुष्टि की है वह यह है कि हमारे पास संपूर्ण मानवीय स्वभाव है क्योंकि मनुष्य ही हैं जिनका छुटकारा होना है। हमारे पास संपूर्ण ईश्वरीय स्वभाव है क्योंकि केवल परमेश्वर ही छुटकारे के ऐसे कार्य को पूरा कर सकता है। परमेश्वर उद्धारकर्ता है। इसलिए संपूर्ण ईश्वरत्व और संपूर्ण मनुष्यत्व एक व्यक्ति में अस्तित्व में है।
>
> — डॉ. थॉमस नेटल्स

दूसरा, चाल्सीदोन का विश्वास कथन भी यीशु के दो स्वभावों के बीच की भिन्नता पर बल देता है। यीशु के पास कोई मिश्रित स्वभाव नहीं था जो ईश्वरीय और मानवीय दोनों गुणों को जोड़ देता हो। उसके मानवीय गुण उसके ईश्वरीय गुणों में कोई रूकावट उत्पन्न नहीं करते; और उसके ईश्वरीय गुण किसी भी तरह से उसके मानवीय गुणों को उन्नत नहीं करते। इसकी अपेक्षा, प्रत्येक स्वभाव पूर्णतया अपरिवर्तित रहता है। उदाहरण के लिए, हम इसे उस तरीके में देखते हैं जिसमें यूहन्ना ने यूहन्ना 1:3, और 8:40 में यीशु के ईश्वरत्व और मनुष्यत्व दोनों की पुष्टि की है। इसी कारण यीशु को परमेश्वर होने के बावजूद भी ज्ञान, अनुभव और कृपा में बढ़ना पड़ा। उसके मानवीय स्वभाव के दृष्टिकोण से, यीशु को तब भी चलना, बात करना, तर्क करना आदि सीखना पड़ा। और ये सब बातें यीशु के मसीह होने की भूमिका के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने मानवीय दृष्टिकोण से उसे ज्ञान और अनुभव में बढ़ने की अनुमति दी, ताकि वह हमारी दुर्बलता में हमारे प्रति और अधिक दयालु और सहानुभूतिपूर्ण हो सके, जैसा कि हम इब्रानियों 2:17-18 में पढ़ते हैं।

तीसरा, चाल्सीदोन का विश्वास कथन पुष्टि करता है कि यीशु केवल एक ही व्यक्ति है।

> जब हम द्वितात्विक एकता के बारे में सोच विचार कर रहे हैं, अर्थात् उस भाव में व्यक्ति का अर्थ, द्वितत्व ही विषय है, या दूत है। यह वह अस्तित्व है, जिसमें दो स्वभावों का वास है। यह वह परम वास्तविकता है जो उसके द्वारा किए गए सभी कार्यों के पीछे है, चाहे वह परमेश्वर के रूप में कार्य करने वाला हो या मनुष्य के रूप में। इसलिए वह "व्यक्ति," जिसके बारे में हम ऐसा सोच सकते हैं कि वह है जो उस स्वभाव को रखता है। यह किसका शरीर है? यह मेरा शरीर है, मैं हूँ यह, यह मैं हूँ, अर्थात् वह "व्यक्ति"। स्वभाव ही वह वस्तु है जो मेरे पास है, और इसलिए व्यक्ति दूसरों के साथ संबंध रखने और आत्म-चेतना की गहरी वास्तविकता है।
>
> — डॉ. जॉन मैकिनले

> और परमेश्वर की बुद्धि में, यह देहधारण का एक रहस्य है कि ऐसे दो स्वभाव हैं जिनमें आपके पास एक मानवीय इच्छा है, एक ईश्वरीय इच्छा है, मानवीय स्नेह है, ईश्वरीय स्नेह है, मानवीय ज्ञान है, और ईश्वरीय सर्वज्ञान के साथ-साथ मानवीय अज्ञानता है जो एक ही व्यक्तित्व में वास कर रहे हैं। और पवित्रशास्त्र के बारे में बहुत सी बातें है जिन्हें हम उस समय समझते हैं जब हम यह महसूस करते हैं कि ऐसे समय थे जिनमें यीशु, मसीह होने की अपनी भूमिका से बाहर होकर अपने

> मनुष्यत्व में पिता के प्रति आज्ञाकारिता और समर्पण में बात करता है। कई बार ऐसा भी हुआ कि उसने केवल अपने ईश्वरत्व में ही बात की। मैं तुमसे कहता हूँ, "मैं तुम्हारे पापों को क्षमा करता हूँ।" परमेश्वर को छोड़ और कौन पापों को क्षमा कर सकता है? पर ये दोनों कार्य एक ही व्यक्ति, एक ही चेहरे के द्वारा किए गए। अतः छुटकारे के लिए व्यक्तित्व में एकता होनी जरुरी है, अर्थात् उस व्यक्ति का एकत्व जिसमें हमारे पास परमेश्वर और मनुष्य दोनों हैं।
>
> — डॉ. थॉमस नैटल्स

यीशु में दो व्यक्ति या दो मन नहीं हैं, जैसे कि मानो एक मानवीय व्यक्ति ने ईश्वरीय व्यक्ति को अपने शरीर में रहने दिया हो। और वह एक व्यक्ति भी नहीं है जो किसी तरह से दो भिन्न व्यक्तियों या मनों का संयोग या मिश्रण हो, जैसे कि मानो एक ईश्वरीय व्यक्ति का एक मानवीय व्यक्ति में विलय हो गया हो। जैसा कि हम यूहन्ना 17:1-5 और कुलुस्सियों 2:9 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं। यीशु हमेशा से त्रिएकता का दूसरा अनंत व्यक्तित्व है और सदा रहा है, जिसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में जाना जाता है। यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका अर्थ यह है कि यीशु में प्रत्येक ईश्वरीय गुण अब भी पूरी सिद्धता से प्रकट होता है। उदाहरण के लिए, उसके मनुष्यत्व के दृष्टिकोण से उसे ज्ञान सीखना पड़ा। परंतु उसके ईश्वरीय स्वभाव और व्यक्तित्व के दृष्टिकोण से वह हमेशा से सर्वज्ञानी रहा है और हमेशा रहेगा। और क्योंकि यीशु प्रत्येक ईश्वरीय गुण को सिद्धता से प्रकट करता है, इसलिए हम उस पर बिना किसी प्रश्न के भरोसा कर सकते और उसकी सेवा कर सकते हैं, और उसकी प्रत्येक प्रतिज्ञा और योजना के पूरा होने के लिए उस पर निर्भर रह सकते हैं।

केवल यीशु ही ऐसा व्यक्ति है जो पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्य है। और उसका ये विशेष गुण हमारे लिए बड़ा तसल्ली देने वाला होना चाहिए। क्योंकि वह पूर्ण मनुष्य है, इसलिए वह हमारी सारी कमजोरियों और दु:खों में सहानुभूति प्रकट कर सकता है। हमारे उद्धारकर्ता ने यह सब अनुभव किया है। और उसने इस जीवन को बिना पाप में गिरे हुए सहन किया, इसलिए हम उस पर पूरी तरह से भरोसा कर सकते हैं उसका अनुसरण कर सकते हैं। इसके साथ-साथ, क्योंकि वह परमेश्वर भी है, इसलिए हम पूरी तरह से आश्वस्त हो सकते हैं कि कोई भी मानवीय कमजोरी कभी भी हमें छुटकारा देने की उसकी योग्यता को नहीं हटाएगी, और उसके पास उन प्रतिज्ञाओं और योजनाओं को पूरा करने की असीमित सामर्थ्य और अधिकार है जो उसने हमारे लिए रखे हैं। क्योंकि यीशु पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्य है, इसलिए वह सिद्ध शासक, मध्यस्थ और उद्धारकर्ता है।

यीशु के देहधारण के संदर्भ में उसके जन्म और तैयारी पर विचार-विमर्श कर लेने के बाद, हम उसके बपतिस्मा की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं।

बपतिस्मा

हम यीशु के बपतिस्मा की जाँच उन तीन रूपों में देखने के द्वारा करेंगे जिन्होंने उसे सेवकाई के लिए तैयार किया, हम इसे इस वास्तविकता के साथ आरंभ करेंगे कि उसने उसे मसीह के रूप में अभिपुष्ट किया।

मसीह के रूप में पुष्टि

कुछ भावों में, यीशु ने मसीह के कार्यभार को उसके देहधारण से आरंभ किया। वह दाऊद के सिंहासन के उत्तराधिकारी के रूप में पैदा हुआ, और मसीह के रूप में स्वर्गदूतों के द्वारा उसकी घोषणा हुई। परंतु उसकी नियुक्ति उसके बपतिस्मा तक सार्वजनिक रूप से घोषित नहीं की गई, यह तब किया

गया जब त्रिएकता के अन्य सदस्यों ने इसकी घोषणा संसार के समक्ष की। पवित्र आत्मा ने कबूतर के समान उस पर उतरकर यह पुष्टि की कि यीशु ही मसीह है। और पिता परमेश्वर ने स्वर्ग से ऊँची आवाज़ में बोल कर उसकी पुष्टि की।

यद्यपि न तो पवित्र आत्मा न ही पिता ने विशेष तौर पर उस समय शब्द "मसीह" का प्रयोग किया, परंतु परमेश्वर ने पहले से ही यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के समक्ष प्रकट कर दिया था कि वह जो इन चिह्नों को प्राप्त करेगा वही मसीह होगा। हम इस विवरण को लूका 3:15-22 में और यूहन्ना 1:19-36 में पाते हैं। इस पुष्टि ने राष्ट्र और संसार के समक्ष यह घोषणा करने के द्वारा उसे कार्यभार के लिए तैयार किया कि परमेश्वर का मसीह अंततः आ पहुँचा है।

यीशु के बपतिस्मा का एक दूसरा परिणाम यह है कि इसने उसका मसीह के कार्य के लिए अभिषेक किया।

कार्य के लिए अभिषिक्त

एक आपत्ति जो यीशु को मसीह कहे जाने के विरूद्ध उठाई गई है, वह यह है कि उसका वास्तव में कभी भी मसीह के कार्य के लिए तेल से अभिषेक नहीं किया गया। परंतु सुसमाचार के वर्णन दर्शाते हैं कि बपतिस्मा के समय पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु का अभिषेक किया गया। इस अभिषेक ने अधिकारिक तौर पर घोषित किया कि यीशु ही मसीह है, और साथ ही उसे सेवकाई के लिए भी सामर्थ्य दी। देहधारी परमेश्वर के होने के रूप में यीशु सर्वसामर्थी था। परंतु मसीह का कार्य एक मानवीय कार्य है। इसलिए जिन लोगों को वह बचाने आया था, उनके समान बनने के लिए उसने अपनी सामर्थ्य और महिमा को ढक दिया। अन्य अभिषिक्त मनुष्यों के समान यीशु अपनी सेवकाई के लिए पवित्र आत्मा की सामर्थ्य पर निर्भर रहा। हम इसे लूका 4:1, 14 और प्रेरितों के काम 10:38 जैसे स्थानों में देखते हैं।

सुनिए यूहन्ना 3:34 पवित्र आत्मा से प्राप्त यीशु की सामर्थ्य के बारे में क्या कहता है :

> क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है; क्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता है। (यूहन्ना 3:34)

यीशु के बपतिस्मा का तीसरा परिणाम जिसका हम उल्लेख करेंगे, वह यह है कि इसने धार्मिकता को पूरा किया।

परिपूर्ण धार्मिकता

जब यीशु बपतिस्मा लेने के लिए यहून्ना बपतिस्मा देने वाले के पास आया तो यूहन्ना ने इसका विरोध किया क्योंकि यीशु पहले से ही धर्मी था। यीशु ने कभी पाप नहीं किया था, और इसलिए उसे पश्चाताप करने की आवश्यकता नहीं थी। परंतु यीशु ने यह कहते हुए प्रत्युत्तर दिया कि उसका व्यक्तिगत रूप से ही पापरहित होना पर्याप्त नहीं था, उसे तो वे सारे धार्मिक कार्य भी पूरे करने थे जो उसके लिए नियुक्त किए गए थे।

मत्ती 3:14-15 में उनकी चर्चा को सुनिए :

> यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, "मुझे तो तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है," यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, "अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। तब उसने उसकी बात मान ली"। (मत्ती 3:14-15)

यीशु के बपतिस्मा का महत्व तब और स्पष्ट हो जाता है जब हम यह समझ लेते हैं कि उसके समय में बपतिम्मा देने वाला केवल एक यूहन्ना ही नहीं था। यूहन्ना के साथ-साथ यहूदियों के विभिन्न समूहों

ने उस समय स्वयं को यरूशलेम की भ्रष्टता से अलग कर लिया था और वे स्वयं को इस्राएल के बचे हुए धर्मी लोग मानते थे। और वे अक्सर अपने सदस्यों को जोड़ने के लिए बपतिस्मा या धोने की विधि का पालन किया करते थे। इसलिए जब यूहन्ना ने यीशु को बपतिस्मा दिया, तो उसने इस्राएल के बचे हुए सच्चे विश्वासियों के साथ स्वयं की पहचान और पुष्टि करने के द्वारा एक आवश्यक धार्मिक कार्य को पूरा किया।

अब जबकि हमने यीशु के जन्म और तैयारी को उसके देहधारण और बपतिस्मा के संदर्भ में देख लिया है, इसलिए आइए हम अपना ध्यान उसकी परीक्षा की ओर लगाएँ।

परीक्षा

यीशु की परीक्षा की कहानी जानी पहचानी है। इसके विवरण मत्ती 4:1-11 और लूका 4:1-13 में दिए गए हैं। संक्षेप में, पवित्र आत्मा यीशु को जंगल में ले गया जहाँ उसने शैतान के द्वारा परखे जाने से पहले चालीस दिनों तक उपवास रखा। परंतु अपनी शारीरिक कमजोरी की अवस्था में भी यीशु आत्मिक और मानसिक रूप से सामर्थी रहा। अपनी भूख के बावजूद भी उसने अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए ईश्वरीय सामर्थ्य का प्रयोग करने से इनकार कर दिया। अपने पास अधिकार होने के बावजूद भी उसने अपने विशेषाधिकार का दिखावा करने के द्वारा स्वयं को प्रमाणित करने से इनकार कर दिया। और पिता के लिए संसार को जीतने के अपने लक्ष्य के बावजूद भी उसने परमेश्वर के शत्रु की सेवा करने के सरल परंतु पापपूर्ण मार्ग को लेने से इनकार कर दिया।

बहुत से धर्मविज्ञानी यह संकेत भी देते हैं कि शैतान के द्वारा यीशु की परीक्षा उत्पत्ति 3 में अदन की वाटिका में आदम और हव्वा की परीक्षा के सामानांतर थी। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 5:12-18 19 में दर्शाया है, ठीक आदम के समान यीशु अपने लोगों का प्रतिनिधि था। परंतु जहाँ आदम असफल हुआ और संपूर्ण मनुष्यजाति पर दंड लेकर आया, वहीं यीशु ने परीक्षा पर विजय पाई और वह अपने लोगों के लिए उद्धार को लेकर आया।

> यीशु की परीक्षा हुई। हमारे समान उसने हर बात में परीक्षा का सामना किया, फिर भी बाइबल कहती है कि वह निष्पाप रहा। निःसंदेह, एक व्यक्ति इन घटनाओं के बारे में सोचता है जिन्हें परीक्षा, या रेगिस्तान की परीक्षाओं, या उसके बपतिस्मा के ठीक बाद उसकी सेवकाई के आरंभ में हुई त्रिरूपी परीक्षा जिसमें उसने शैतान का सामना किया, के रूप में जाना जाता है। हममें से बहुत शायद कभी भी शैतान का सामना न करें - उसके अधीन कार्य करने वाला केवल एक दूत ही हमारे लिए काफी होगा - परंतु यीशु के लिए तो शैतान को स्वयं ही आना पड़ा। परंतु यीशु का संपूर्ण जीवन ही एक तरह से परीक्षा के अधीन था। मैं सोचता हूँ कि यह सोचना गलत होगा कि वह केवल उसी समय परीक्षा में पड़ा था। मैं सोचता हूँ कि वे परीक्षाएँ बहुत बड़ी थीं और उसकी अपनी पहचान और उसके मिशन के प्रति विशेष रूप से केंद्रित थीं। मैं सोचता हूँ कि यीशु अपने संपूर्ण जीवनकाल के दौरान परीक्षाओं का सामना करता रहा। मेरे विचार से मुख्य बात यह है कि यीशु हमारा प्रतिनिधि है। वह हमारा स्थानापन्न है। वह अंतिम आदम है, दूसरा व्यक्ति है। और इसलिए जैसे आदम की परीक्षा वाटिका में हुई थी, वैसे ही दूसरे आदम की परीक्षा भी सर्प के द्वारा होनी थी। यदि उसे हमारा प्रतिनिधित्व करना है, तो उसकी परीक्षा भी ठीक वैसे ही होनी चाहिए जैसे हमारी होती है। अन्यथा, वह हमारा स्थानापन्न नहीं है। पवित्रशास्त्र बहुत स्पष्ट है कि अपनी सेवकाई के दौरान कोई ऐसा समय नहीं आया जब यीशु पाप में गिरा हो। वह निष्पाप था। वह अपने विचार, वचन

> और कार्य में पापरहित था। परंतु मैं सोचता हूँ कि हमारे पाप को सहने वाला बनने और हमारा स्थानापन्न बनने के उद्देश्यों के लिए यह उसके लिए आवश्यक था कि उसकी परीक्षा हो।
>
> — डॉ. डेरेक डब्ल्यू. एच. थॉमस

इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों के लिए हम यीशु की परीक्षा के तीन महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे। पहला, उसकी परीक्षा ने उसे आज्ञाकारिता सिखाई।

आज्ञाकारिता

जैसे कि इब्रानियों 5:8-9 कहता है :

> [यीशु ने] दुःख उठा-उठा कर आज्ञा मानना सीखी। और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया। (इब्रानियों 5:8-9)

यीशु पूरी तरह से निष्पाप था; उसने कभी परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया। परंतु वह संपूर्ण और सच्चा मनुष्य भी था। इसलिए उसे अपने पूरे जीवनभर परमेश्वर की धर्मी माँगों, चुनौतियों और परीक्षाओं पर विजय प्राप्त करना सीखना पड़ा। जैसा कि हम उन परीक्षाओं में देखते हैं जिनका उसने सामना किया, यीशु ने व्यवस्था की माँगों को पूरा करने के द्वारा और अपने जीवन के लिए पिता की योजना के प्रति समर्पित होने के द्वारा परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। और इस आज्ञाकारिता ने उसे मसीह के रूप में अपने कार्य के लिए तैयार किया, क्योंकि जैसा कि हम इब्रानियों 5:9 में पढ़ते हैं, इसने उसे परमेश्वर के लिए ग्रहण किए जाने योग्य बलिदान बना दिया, ताकि वह अनंत उद्धार का स्त्रोत बन जाए।

दूसरा विचार जिसका उल्लेख हम करेंगे, वह यह है कि यीशु की परीक्षा ने उसे उसके लोगों के लिए सहानुभूति प्रदान की।

सहानुभूति

यीशु ने परीक्षा के सामने हार नहीं मानी। परंतु फिर भी उसने इसे बड़ी तीव्रता से अनुभव किया। उसने जान लिया कि जो वस्तुएँ शैतान उसे देने को कह रहा था, वे चाहनेयोग्य थीं और उपवास के कारण उसकी कमजोर हुई अवस्था ने उनको प्राप्त करने की उसकी लालसा को बढ़ा दिया होगा। और इस अनुभव ने हमारे लिए उसकी करुणा और समझ को बढ़ा दिया होगा जब हम हमारे जीवनों में दु:ख और संघर्ष का सामना करते हैं। जैसा कि हम इब्रानियों 4:15 में पढ़ते हैं :

> क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दु:खी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया - तौभी निष्पाप निकला। (इब्रानियों 4:15)

> यीशु द्वारा पाप की परीक्षा का सामना करना और उस पर विजय प्राप्त करना, मसीहियों को बहुत राहत देता है क्योंकि वह हर प्रकार से संपूर्ण मनुष्य था। उसने परीक्षा का अनुभव तो किया परंतु वह उसके अधीन नहीं हुआ। और एक ऐसा भाव है जिसमें वह सब कुछ जो यीशु ने सहा वह एक आदर्श बन जाता है कि मसीही परीक्षा का सामना कैसे करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

— डॉ. साइमन विबर्ट

> जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि यीशु ने पाप करने की परीक्षा का सामना किया और उस पर विजय पाई, तो इब्रानियों 4 इसके बारे में विस्तार से बात करता है। एक बात जिसे वहाँ संबोधित किया गया है, वह यह है कि हममें से बहुतों के मन में एक डर है, और वह यह है कि हम अकेले हैं, यह कि हम जब किसी कष्ट या बुरे कार्य से होकर जाते हैं तो वह अनुभव केवल हमारे साथ ही हो रहा है। और सच्चाई तो यह है कि यीशु ने तब अपने सांसारिक जीवन में इसे समझ लिया था कि परीक्षा में पड़ना क्या होता है, और आज जब वह हमारे महान महायाजक के रूप में स्वर्गीय स्थानों में है, तो उसके पास यह समझ है। इसलिए हम आश्वस्त हो सकते हैं कि हम अकेले नहीं है, और ऐसी कोई भी बात नहीं है जो हम यीशु के पास लेकर जाएँ जिसे वह पहले से ही न समझता हो, और इसलिए वह अब हमारी उस परिस्थिति में आने और हमारा सहायक बनने के योग्य है।

— डॉ. जेम्स डी. स्मिथ III

वह तीसरा विचार जिसका उल्लेख हम यीशु की परीक्षा के संबंध में करेंगे, वह है उसकी निष्कलंकता।

निष्कलंकता

शब्द निष्कलंकता का अर्थ पाप करने की असमर्थता है। मसीहियों ने सदियों से इसका प्रयोग इस सच्चाई को दर्शाने के लिए किया है कि यीशु पाप करने में असमर्थ था। धर्मविज्ञानी अक्सर यीशु की निष्कलंकता के बारे में बात उसकी परीक्षा के साथ जोड़कर करते हैं क्योंकि यह उसके जीवन का ऐसा समय था जब उसके लिए पाप करने की संभावना सबसे अधिक थी, यदि ऐसा संभव होता तो।

सभी मसीही जानते हैं कि यीशु ने कभी पाप नहीं किया। उसने कभी परीक्षा के सामने हार नहीं मानी, और न ही उसमें कोई बुरा विचार या इच्छा उत्पन्न हुई, और न उसने कोई पापपूर्ण शब्द कहा। उसके निष्पाप होने का दावा 2 कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 4:15 और 7:26; 1 पतरस 2:22; और 1 यूहन्ना 3:5 जैसे अनुच्छेदों में किया गया है।

परंतु यह भी सच है कि वह पाप करने के योग्य था ही नहीं। जैसा कि हमने देखा है, यीशु त्रिएकता का दूसरा व्यक्तित्व था। और परमेश्वर पाप नहीं कर सकता, क्योंकि वह उन तरीकों में कार्य नहीं कर सकता है जो कि उसके स्वभाव के विपरीत हों। परमेश्वर के तीनों व्यक्तित्व सदा से निष्कलंक रहे हैं और हमेशा रहेंगे। हम इसे हबक्कूक 1:13; याकूब 1:13; 1 यूहन्ना 1:5 और कई अन्य स्थानों में देखते हैं।

परंतु यह उसकी परीक्षा को कम वास्तविक नहीं बना देता। अपने मानवीय स्वभाव के कारण यीशु ने मानवीय दृष्टिकोण से परीक्षा का अनुभव किया। उसने उन वस्तुओं के महत्व को पहचाना जो उसके सामने प्रस्तुत की गईं, और ध्यान से उन लाभों को भी समझ लिया जो वे प्रदान कर सकती थीं। अतः उसकी आज्ञाकारिता और सहानुभूति किसी भी तरह से कम नहीं हुई है। वास्तव में, हम यह भी कह सकते हैं कि क्योंकि यीशु निष्कलंक है, इसलिए उसकी आज्ञाकारिता और सहानुभूति वास्तव में बढ़ गई हैं, क्योंकि उसने अनुभव से इन्हें सिद्धता से सीखा था, और अब वह हमें ऐसा प्रत्युत्तर देता है जो हमारी आवश्यकताओं के प्रति बिलकुल उपयुक्त है।

यीशु के जन्म और तैयारी के समय का विवरण सुसमाचारों में संक्षेप में दिया गया है, इसलिए उन्हें कई बार अनदेखा कर दिया जाता है। परंतु उनमें बहुत से महत्वपूर्ण सत्य पाए जाते हैं। और उनमें से सबसे बड़ा सत्य इस बात का आश्वासन है कि परमेश्वर का प्रतिज्ञात अभिषिक्त जन आ गया है। मसीह के कार्य के लिए यीशु का जन्म और उसकी तैयारी परमेश्वर के महान प्रेम और दया को प्रकट करते हैं, क्योंकि उसने हमें पाप और मृत्यु के बंधन में छोड़ नहीं दिया, बल्कि हमारे मसीह के रूप में अपने पुत्र को भेजने के द्वारा अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा किया है।

मसीह के रूप में यीशु की भूमिका को उसके जन्म और उसकी तैयारी के संदर्भ में देख लेने के बाद, अब हम उसकी सार्वजनिक सेवकाई की खोज करने के लिए तैयार हैं।

सार्वजनिक सेवकाई

इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों के लिए हम यीशु की सार्वजनिक सेवकाई को इस प्रकार परिभाषित करेंगे कि यह तब आरंभ हुई जब उसने सार्वजनिक रूप से प्रचार करना शुरू किया, और यह तब समाप्त हुई जब वह आखिरी बार यरूशलेम को गया। एक बार फिर से हम उस समय के अनेक विवरणों को देखने से पहले उन घटनाओं का संक्षिप्त रूप से वर्णन करेंगे जो उस समय के दौरान हुईं।

लूका 3:23 कहता है कि यीशु उस समय लगभग तीस वर्ष का था जब उसने अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरंभ की। और चारों सुसमाचारों, विशेषकर यूहन्ना, में दिए गए संकेतों के आधार पर कई विद्वान यह मानते हैं कि यीशु की सार्वजनिक सेवकाई लगभग तीन वर्ष तक चली। विशेष रूप से, यूहन्ना उल्लेख करता है कि इस समय के दौरान यीशु ने फसह के तीन या चार त्यौहारों में भाग लिया था, जैसा कि हम यूहन्ना 2:23, 6:4, 11:55 और शायद 5:1 में देखते हैं।

मत्ती 4:13-17 के अनुसार यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई कफ़रनहूम से आरंभ की, जो गलील के क्षेत्र का एक शहर था और गलील की झील के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में स्थित था। जैसा कि हम मत्ती 4:23-24 में देखते हैं, उसने गलील के पूरे क्षेत्र में और इस्राएल के अन्य शहरों में परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया और आश्चर्यकर्म किए। जैसा कि मत्ती 10 और मरकुस 3 में लिखा है, इस समय के दौरान उसने बारह चेलों को भी चुना और उन्हें परमेश्वर के राज्य की घोषणा में सम्मिलित होने के लिए तैयार किया। कालांतर में उसने अपनी सेवकाई को सामरिया और यहूदिया सहित इस्राएल के अन्य क्षेत्रों में भी फैला दिया।

अपनी सार्वजनिक सेवकाई के अंत में यीशु ने जानबूझकर यरूशलेम की यात्रा की कि उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए। इसके साथ-साथ, उसने अपने चेलों को इस सच्चाई के लिए तैयार किया कि वह उसी राज्य के लोगों के द्वारा मार डाला जाने वाला है जिसको बचाने के लिए उसका अभिषेक किया गया था।

यद्यपि यीशु की मुख्य सेवकाई पश्चाताप और विश्वास के शुभ संदेश का प्रचार करना थी क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट था, फिर भी उसने अनुभव किया वह इसे विभिन्न तरीकों से करने के लिए स्वतंत्र था। उसने विभिन्न लोगों के प्रति सेवा की, जैसे कि सामान्य इस्राएलियों, धार्मिक नेताओं, सामाजिक बहिष्कृतों, अन्यजातियों और हर तरह के पापियों के प्रति। उसने विभिन्न आकार के समूहों से भेंट की, हजारों की भीड़ से लेकर परिवारों तक और व्यक्तिगत रीति से भी भेंट की। उसने विभिन्न स्थानों में शिक्षा दी, जैसे घरों में, आराधानालयों में, और खुले स्थानों में। और उसने दृष्टांतों, प्रश्नों, भविष्यद्वाणियों, प्रचारों और यहाँ तक कि आश्चर्यकर्मों सहित शिक्षण की विस्तृत रणनीतियों का प्रयोग किया। और प्रत्येक घटना में लोगों ने यह पहचाना कि उसने अद्वितीय अधिकार के साथ उनके प्रति सेवकाई की, और उन्होंने बड़े

जोश के साथ उसके प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त की - कुछ ने विश्वास और पश्चाताप के साथ, तो कुछ ने क्रोध और इनकार के साथ।

सुसमाचार हमें यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के बारे में काफी जानकारी प्रदान करते हैं, परंतु हम केवल तीन मुख्य विषयों को ही दर्शाएँगे : पहला, यीशु द्वारा सुसमाचार की घोषणा; दूसरा, उसके द्वारा सामर्थ्य का प्रदर्शन; और तीसरा, मसीह के कार्य के लिए उसके अभिषेक की पुष्टि। आइए सबसे पहले उस सुसमचार को देखें जिसकी घोषणा यीशु ने की।

सुसमाचार

यीशु ने कई तरीकों और रूपों में सुसमाचार का प्रचार किया, उनमें से कुछ अप्रत्यक्ष रूप में थे तो कुछ बहुत प्रत्यक्ष रूप में। उसने दृष्टांतों, संदेशों, बातचीत, आशीषों की भविष्यद्वाणियों और दंड की चेतावनियों, भविष्य के पूर्वानुमानों, प्रार्थनाओं, और आश्चर्यकर्मों का भी प्रयोग किया। परंतु जब सुसमाचार के लेखकों ने उसके संदेश को सारगर्भित किया, तो उन्होंने आधारभूत रूप से इसका वर्णन परमेश्वर के आने वाले राज्य के प्रकाश में पश्चाताप की बुलाहट के रूप में किया।

मत्ती 4:17 में यीशु के सुसमाचार के इस सार को सुनिए :

> उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, "मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।" (मत्ती 4:17)

मरकुस 1:14-15 में मरकुस ने यीशु के संदेश का वर्णन इसी रीति से किया। और मत्ती 3:2 में मत्ती ने सुसमाचार के इसी संदेश को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के साथ जोड़ा।

हम यीशु के सुसमाचार के दो पहलुओं को देखेंगे : पहला, उसका संदेश कि राज्य आ रहा है; और दूसरा, तात्कालिक पश्चाताप की उसकी बुलाहट। आइए सबसे पहले राज्य के बारे में यीशु की शिक्षा को देखें।

राज्य

> जब हम सुसमाचारों को खोलते हैं और उन्हें पढ़ना आरंभ करते हैं, तो वहाँ एक बात है जो हमें आश्चर्यचकित कर सकती है, परंतु वह हमारा ध्यान अवश्य अपनी ओर खींचेगी, और वह यह है कि जब यीशु प्रचार कर रहा था और शिक्षा दे रहा था तो उसका आदर्श या नमूना स्पष्टतः परमेश्वर का राज्य था। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रचार से भी कोई संदेह नहीं जो यीशु के पहले वचनों को पूर्व में ही दर्शाता है, "परमेश्वर का राज्य निकट है," या "निकट आ पहुँचा है," या "स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।" और फिर उसकी सारी शिक्षाओं में, "धन्य है वे जो मन के दीन हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है," स्वर्ग के राज्य के सभी दृष्टांतों की सारी शिक्षा में उन सभी रूपों में जिनमें वह स्वयं को दाऊद के वंश के सच्चे राजा के रूप में प्रकट करता है जो एक गदहे पर सवार होकर यरूशलेम की ओर जा रहा है, उसके सारे प्रकट तरीके स्पष्ट करते हैं कि सुसमाचार, सुसमाचारक, सुसमाचार लेखक चाहते हैं कि हम स्पष्ट रीति से समझ जाएँ कि यीशु का संदेश, उसका संपूर्ण जीवन परमेश्वर के राज्य या परमेश्वर के शासन को लाने या उसकी पुनर्स्थापना करने के विषय में था।
>
> — डॉ. जोनाथन पेनिंगटन

अपने दिनों के सभी यहूदियों के समान यीशु जानता था कि परमेश्वर अपनी सारी सृष्टि पर अनंत रूप से सर्वोच्च है। परंतु पुराने नियम ने यह भी प्रकट किया कि परमेश्वर की योजना अपने अनंत राजत्व के बारे में यह थी कि वह पृथ्वी पर उसके दृश्य राज्य में प्रदर्शित हो। जैसा कि हमने पहले के अध्याय में देखा, उसने इस प्रक्रिया को तब आरंभ किया जब उसने इस संसार की रचना की और आदम और हव्वा को उसके सह-शासकों के रूप में नियुक्त किया। परंतु वे इस संसार को सिद्ध बनाने के अपने दिए हुए कार्य में बुरी तरह से असफल हो गए। परमेश्वर का राज्य फिर इस्राएल के राष्ट्र में आगे की ओर बढ़ा जब यह एक बड़े साम्राज्य में विकसित हो गया। परंतु यह इस्राएल के पाप और उसकी बंधुआई के कारण फिर से बाधित हो गया। और यद्यपि परमेश्वर ने एज्रा ओर नहेम्याह के दिनों में इस राष्ट्र को पुनर्स्थापित करने का प्रस्ताव दिया, परंतु लोगों की अविश्वासयोग्यता के कारण बंधुआई कई और सदियों के लिए बढ़ गई। यीशु के समय तक इस्राएल सैंकड़ों वर्षों की बंधुआई सह चुका था और मसीह की प्रतीक्षा कर रहा था कि वह परमेश्वर के राज्य की पूर्णता को और इसकी सारी आशीषों को पृथ्वी पर लेकर आए। अतः जब यीशु ने इस शुभ संदेश की घोषणा की कि राज्य निकट है, तो यह अद्‌भुत आशा का संदेश था।

यीशु ने इस शुभ संदेश की घोषणा की कि परमेश्वर के राज्य का अंतिम चरण उसके समय में इस पृथ्वी पर आ रहा था। स्वर्ग के नमूने पूरे संसार को चारित्रित करने जा रहे थे । जैसा कि हम मत्ती 5:3-12 में दिए गए धन्य वचनों में देखते हैं, परमेश्वर के सारे विश्वासयोग्य लोग अद्‌भुत रूप से परमेश्वर के राज्य में आशीषित होने वाले थे। उनके दु:खों का अंत होगा, और वे पूरी पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे। कोई विदेशी शक्ति झूठी आराधना के लिए बाध्य नहीं करेगी। कोई भ्रष्ट धार्मिक नेता झूठी शांति की स्थापना के लिए इस्राएल के शत्रुओं से समझौता नहीं करेगा। जिन्होंने पाप किया था उन्हें क्षमा किया जाएगा। जिन्हें बंधुआई में ले जाया गया था, उन्हें पुनर्स्थापित किया जाएगा। जो रोगों और बीमारियों के श्राप की अधीनता में गिर गए थे, उन्हें चंगा किया जाएगा। प्रभु स्वयं इस्राएल के शत्रुओं को पराजित करेगा, लोगों को उनके पाप से साफ करेगा, और पूरी सृष्टि को पुनर्स्थापित करेगा।

परंतु राज्य के बारे में यीशु के सुसमाचार का संदेश जितना भी अद्‌भुत दिखाई दे, इसमें एक शर्त सम्मिलित थी : पश्चाताप।

पश्चाताप

यीशु ने चेताया कि परमेश्वर का राज्य तेजी से आ रहा था, और यह न केवल परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों को आशीष देने में, बल्कि उसके शत्रुओं के विरूद्ध दंड में भी प्रकट होगा। इसलिए, यदि इस्राएल प्रतिज्ञा की गई आशीषों को प्राप्त करना चाहता था, तो उन्हें पहले अपने पापों से पश्चाताप करना था।

> पाप से पश्चाताप में उस पाप से दूर होना शामिल होता है। परंतु जहाँ तक सुसमाचारिक पश्चाताप की बात है, तो यह किसी बात से मुड़ना मात्र नहीं है। यह इसके साथ-साथ किसी बात की ओर मुड़ना भी है। और वह बात जिसकी ओर मुड़ना है वह एक व्यक्ति है। यह यीशु है, और हम विश्वास के साथ उसकी ओर मुड़ते हैं। अतः यह मेरे पाप को त्यागना है और मसीह की ओर विश्वास से मुड़ना है। इसके साथ-साथ, हम कुछ भिन्न आयामों को भी देख सकते हैं कि उस पश्चाताप में क्या कुछ शामिल होता है, और यह कैसा होता है। उनमें से एक मेरे पापों के प्रति विवेकीय या बौद्धिक ज्ञान है। मैं वहाँ पश्चाताप करना नहीं चाहूँगा जहाँ मैं अपने आप को एक पापी के रूप में नहीं पहचानता और यह नहीं समझता कि मैंने किसी न किसी तरह से परमेश्वर की विधियों को तोड़ा है। इसलिए इसके प्रति जागरूकता, जानकारी या कायलता का भाव होना ही चाहिए कि मैं एक पापी हूँ और जो मैंने किया है वह परमेश्वर की दृष्टि में गलत है। इसके साथ-साथ, यह

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> भी संभव है कि कोई धारणात्मक रूप से पहचान ले कि जो कुछ उसने किया है वह परमेश्वर को अप्रसन्न करने वाला है और फिर भी उसकी कोई परवाह न करे। इसलिए दूसरा आयाम पछतावे या ग्लानि का आयाम होगा, एक भावनात्मक कायलता का कि जो कुछ मैंने किया वह न केवल गलत है, परंतु मुझे इसका पछतावा भी है। मैं इससे अप्रसन्न हूँ। मेरे मन में मेरे पाप के प्रति एक तरह का दुःख है, जो कि परमेश्वर को भी है। ये दो घटक तब मिलकर तीसरे घटक की ओर अगुवाई करते हैं जो कि इच्छा का क्रियान्वयन है, या उस प्रतिज्ञा या आनंद के रूप में आए पाप की ओर से मुड़ने की स्वैच्छिक क्षमता है, जो उसे प्रदान करने में अक्षम है जिसकी प्रतिज्ञा उसने की थी, और इसकी अपेक्षा मसीह की ओर मुड़ें जो बेहतर प्रतिज्ञाओं और आनंद की भावनाओं का आधार है।
>
> — डॉ. राब लिस्टर

पश्चाताप को सिक्के के पलटने के रूप में समझना अक्सर सहायक होता है। एक ही गति में, हम अपने पाप से धार्मिकता की ओर मुड़ जाते हैं। हम परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने के सच्चे दुःख की भावना के द्वारा कि हमने अपने पड़ोसी को ठेस पहुंचाई है और वे इससे प्रभावित हुए हैं, अपने पाप से दूर होना आरंभ कर देते हैं। और हम अपने पापों से दूर होने को तब पूरा करते हैं जब हम परमेश्वर के सामने अपने दोष को अंगीकार कर लेते हैं और उससे क्षमा की माँग करते हैं। पश्चाताप के ये पहलू यिर्मयाह 31:19 और प्रेरितों के काम 2:37-38 जैसे अनुच्छेदों में स्पष्ट हैं।

परंतु पश्चाताप का अर्थ परमेश्वर की ओर मुड़ना भी है जिसमें हम उससे हमें शुद्ध करने और पुनर्स्थापित करने करने की प्रार्थना करते हैं और भविष्य में उसकी आज्ञा मानने का दृढ निश्चय भी करते हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि हम फिर कभी पाप नहीं करेंगे। परंतु इसका यह अर्थ अवश्य है कि सच्चे पश्चाताप में उसकी आज्ञाओं को मानने के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा सम्मिलित होती है। हम इसे योएल 2:12-13 और 2 कुरिन्थियों 7:10-11 जैसे स्थानों में देखते हैं।

> बाइबल में पश्चाताप एक बड़ा शब्द है। यह "मेटानोइया" है। और यदि हम अपने पापों से पश्चाताप करने वाले हैं, तो इसका अर्थ है कि इस मेटानोइया की पूरी समझ में ही बदलाव आ जाएगा। हम अपने पापपूर्ण मार्गों से बदलते हैं। इसका अर्थ है कि हम उस दिशा में जा रहे हैं और यीशु हमारे जीवनों को स्पर्श करता है, तो हम इस दिशा की ओर चल पड़ते हैं। हम बदलते हैं। हम उन सब बातों में बदल जाते हैं जिनमें वह हमसे बदलाव को चाहता है। सच्चाई बताई जानी चाहिए, यह सब कुछ है। मन के बदलने की संपूर्ण समझ है। यह केवल उसमें बदलाव नहीं है कि आप बौद्धिक रूप से किस बात पर विश्वास करते हैं। वास्तव में, मुझे पुराने नियम का शब्द "जानना" पसंद है। वह है "यादा" और उसका अर्थ है अनुभव करना और सामना करना। इसलिए यह केवल मन ही नहीं है कि जिसके द्वारा हम कुछ जान सकते हैं, बल्कि हम अपने हाथों, पैरों, भावनाओं, हृदय और हमारे संपूर्ण व्यक्तित्व के द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं। मन के बदलाव का अर्थ सब कुछ में बदलाव है। और मैं विश्वास करता हूँ कि हम सब कुछ को बदल देते हैं, उदाहरण के रूप में, हम बदलना आरंभ करते हैं, उन बातों को जिन्हें हम करते हैं और जो हमारे बारे में है। हम अपने व्यवहार को बदलना आरंभ करते हैं। यदि हमारे व्यवहार में कोई बदलाव नहीं आता है, तो फिर शायद कोई भी बदलाव हममें नहीं आया है। सेमीनरी के मेरे एक पुराने प्रोफेसर यह कहते थे, "आप वही

> करते हैं जो आप विश्वास करते हैं और आप वही विश्वास करते हैं जो आप करते हैं।" इसका मन के पश्चाताप से बहुत गहरा संबंध है।
>
> — डॉ. मैट फ्रीडमैन

यीशु का संदेश कि परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर आ रहा है, एक अद्‌भुत समाचार है। परंतु यह पश्चाताप की आवश्यकता से कभी भी अलग नहीं हो सकता। केवल वही जो अपने पापों से पश्चाताप करते हैं और विश्वास से परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं, उन्हीं को उसके राज्य की आशीषों का आनंद लेने की अनुमति दी जाएगी।

सुसमाचार की उदघोषणा के अतिरिक्त, यीशु की सार्वजनिक सेवकाई में सामर्थ्य के कई कामों को दर्शाया गया है जिसने उसके संदेश की सत्यता को प्रमाणित किया है।

सामर्थ्य

प्रेरितों के काम 10:38 में प्रेरित पतरस ने यीशु की चमत्कारिक सामर्थ्य को इस प्रकार सारगर्भित किया है :

> परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया; वह भलाई करता और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। (प्रेरितों के काम 10:38)

यीशु ने कई आश्चर्यकर्म किए जिन्होंने पवित्र आत्मा की सामर्थ्य को प्रदर्शित किया। जब उसने यूहन्ना 2:1-11 में पानी को दाखरस में बदला, तो उसने सृष्टि पर अपने प्रभुत्व को दर्शाया। उसने बुरी आत्माओं और उनके प्रभावों पर अपने अधिकार को दिखाया, जैसा कि हम मत्ती 12:22; मरकुस 1:23-26; और लूका 9:38-43 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं। उसने बीमारियों और दुर्बलताओं को चंगा किया, जैसा कि हम मरकुस 10:46-52; लूका 8:43-48; और यूहन्ना 9 में देखते हैं। यीशु ने मृतकों को भी जिला उठाया, जैसा कि हम मत्ती 9:18-26; लूका 7:11-15; और यूहन्ना 11:41-45 में देखते हैं। वास्तव में, यीशु ने इस्राएल के इतिहास में किसी भी अन्य भविष्यद्वक्ता से अधिक आश्चर्यकर्म किए। नया नियम कम से कम 35 विशेष आश्चर्यकर्मों का उल्लेख करता है, और यूहन्ना का सुसमाचार संकेत करता है कि उसने इनसे भी अधिक बहुत से आश्चर्यकर्म किए। जैसा कि हम यूहन्ना 21:25 में पढ़ते हैं :

> और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे संसार में भी न समातीं। (यूहन्ना 21:25)

यीशु द्वारा आश्चर्यजनक सामर्थ्य के प्रर्दशन के कम से कम दो आशय थे जिन पर हमें ध्यान देना चाहिए। पहला, उन्होंने उसके मसीह होने की पहचान को प्रमाणित किया। और दूसरा, उन्होंने पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को लाने की उसकी अंतिम सफलता को निश्चित किया। आइए हम सबसे पहले यह देखें कि कैसे यीशु के आश्चर्यकर्मों ने उसकी पहचान को प्रमाणित किया।

प्रमाणित पहचान

यीशु की सामर्थ्य के आश्चर्यकर्मों ने मसीह के रूप में उसकी पहचान को प्रमाणित किया, अर्थात् एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसका परमेश्वर के द्वारा विशेष रूप से अभिषेक किया गया था कि वह उसके राज्य के अंतिम चरण को लाए। मसीह होने के रूप में यीशु परमेश्वर का अधिकारिक राजदूत था। और

उसके आश्चर्यकर्मों ने उन सब के विषय में जो कुछ यीशु ने कहा था परमेश्वर के प्रबल प्रमाण को दर्शाया। हम इसे लूका 7:22; यूहन्ना 5:36; और 10:31-38 में, और अन्य कई स्थानों में देखते हैं।

इससे बढ़कर, पवित्रशास्त्र में कई लोगों ने यीशु के आश्चर्यकर्मों को अभिषिक्त कार्यभारों के साथ जोड़ा जो मसीह के विस्तृत कार्य के पहलू थे। उदाहरण के लिए, उन्होंने उसे लूका 7:16; और यूहन्ना 6:14, और 7:40 में उसकी भविष्यद्वक्ता की भूमिका की पूर्णता में देखा। स्वयं यीशु ने लूका 1:12-19 में इस चमत्कारिक सामर्थ्य को याजकों के कर्त्तव्यों के साथ जोड़ा। और मत्ती 9:27, 12:23, 15:22 और 20:30 में उसके आश्चर्यकर्म राजा होने के उसके कार्यभार से जुड़े हैं। और यूहन्ना 10:37-38 में यीशु ने क्या कहा, सुनें :

> यदि मैं अपने पिता के काम नहीं करता, तो मेरा विश्वास न करो। परंतु मैं करता हूँ, तो चाहे मेरा विश्वास न भी करो, परंतु उन कामों का तो विश्वास करो, ताकि तुम जानो और समझो कि पिता मुझ में है और मैं पिता में हूँ। **(यूहन्ना 10:37-38)**

यीशु के आश्चर्यकर्मों ने यह प्रमाणित किया कि उसके सुसमाचार का संदेश सत्य था। वह वास्तव में मसीह था, और वह वास्तव में पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण को ला रहा था। जैसा कि उसने लूका 11:20 में कहा :

> परंतु यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ्य से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में आ पहुँचा है। **(लूका 11:20)**

यीशु के सामर्थी कार्यों ने प्रमाणित किया कि वह मसीह था - वह जो पृथ्वी पर उसके स्वर्गीय राज्य को ले आया था कि परमेश्वर के लोगों और सृष्टि के ऊपर से शैतान के अधिकार का अंत करे।

यह देख लेने के बाद कि यीशु के सामर्थ्य के प्रदर्शन ने मसीह के रूप में उसकी पहचान को प्रमाणित किया, आइए हम यह देखें कि कैसे उन्होंने उसकी सफलता को निश्चित किया।

निश्चित सफलता

यीशु के आश्चर्यकर्मों ने यह दर्शाया कि उसके पास अपने दावों और प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिए आवश्यक सामर्थ्य थी। उसके पास वह सारी सामर्थ्य थी कि वह पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को बिल्कुल वैसे ही बनाए जैसा कि स्वर्ग का उसका राज्य है। और वास्तव में, आशीषों के उसके बहुत सारे आश्चर्यकर्मों ने उस राज्य के पूर्वअनुभव को प्रदान किया। उदाहरण के लिए, जब उसने बीमारों को चंगा किया और मृतकों को जिलाया, तो उसने राज्य का पूर्वरूप प्रदान किया जहाँ कोई बीमारी या मृत्यु नहीं है, जैसा कि प्रकाशितवाक्य 21:4 में दर्शाया गया है। और जब उसने हजारों भूखे लोगों को भोजन खिलाया, तो उसने उस प्रचुरता या बहुतायत का ठोस उदाहरण दिया जो उसके अनंतकाल के राज्य का चरित्र था, जैसा कि हम निर्गमन 23:25-26; योएल 2:26; और लूका 12:14-24 जैसे स्थानों में पढ़ते हैं।

यीशु ने यह भी दर्शाया कि उसके पास उसके राज्य के शत्रुओं को नाश करने के लिए आवश्यक संपूर्ण सामर्थ्य है। उदाहरण के लिए, जब उसने दुष्टात्माओं को निकाला, तो उसने दिखाया कि उसके पास एक अटल राज्य को स्थापित करने के लिए आवश्यक संपूर्ण सामर्थ्य है - एक ऐसा राज्य जिसको किसी से कोई खतरा न हो - जैसा कि हम मत्ती 12:22-29 में देखते हैं।

यीशु की सामर्थ्य ने उस हरेक का ध्यान अपनी ओर खींच लिया जिसने उसे देखा था। और जहाँ उसके शत्रुओं ने कटुता से उसकी सामर्थ्य को शैतान का धोखा कहते हुए झुठला दिया, वहीं सच्चाई यह है कि यीशु की सामर्थ्य परमेश्वर की ओर से थी। और इसने प्रमाणित किया कि यीशु ही मसीह था, और उसके पास उसके हरेक प्रस्ताव, प्रतिज्ञा और चेतावनी को पूरा करने की योग्यता थी। और मसीही होने के नाते हमारे लिए यह बड़ी राहत और उत्साह का कारण होना चाहिए। इसका अर्थ है कि यीशु में हमारा

विश्वास सही स्थान पर आधारित है। इसका कोई महत्व नहीं कि हमारे मन में कितने भी संदेह हों और इसका भी कोई महत्व नहीं कि परमेश्वर यीशु में आरंभ किए गए कार्य को पूरा करने में कितना भी समय ले, यीशु ने हमें उस पर विश्वास करने के पर्याप्त कारण दिए हैं- चाहे कुछ भी होता रहे। वह वास्तव में अभिषिक्त है, मसीह है। और यदि हम उसके प्रति विश्वासयोग्य रहें, तो उसके अनंत राज्य में हमें निश्चित रूप से सम्मान और आशीष का स्थान मिलेगा।

अब जबकि हमने यीशु के सुसमाचार की उदघोषणा और उसकी सामर्थ्य के प्रदर्शनों को देख लिया है, इसलिए आइए हम मसीह के उसके कार्यभार के लिए उसके अभिषेक की पुष्टियों के आधार पर उसकी सार्वजनिक सेवकाई पर विचार करें।

अभिपुष्टि

मसीह के रूप में यीशु के अभिषेक की पुष्टि उसकी सार्वजनिक सेवकाई के दौरान कई तरह से की गई थी। परंतु उदाहरण के लिए, हम अपना ध्यान दो उल्लेखनीय अभिपुष्टियों की ओर लगाएँगे : पतरस का प्रैरितिक अंगीकार कि यीशु ही मसीह है; और यीशु का महिमा में रूपांतरण। आइए सबसे पहले पतरस के प्रैरितिक अंगीकार को देखें।

प्रैरितिक अंगीकार

मत्ती 16:15-17 में पतरस के अंगीकार के बारे में मत्ती के विवरण को सुनें :

> [यीशु ने] उनसे कहा, "परंतु तुम मुझे क्या कहते हो?" पतरस ने उसको उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि मांस और लहू ने नहीं परंतु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।" (मत्ती 16:15-17)

इसी घटना का वर्णन मरकुस 8:27-30 और लूका 9:18-20 में भी किया गया है।

> पतरस का अंगीकार वास्तव में सुसमाचारों में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है, क्योंकि यह तीनों समदर्शी सुसमाचारों मत्ती, मरकुस और लूका में पाया जाता है। और तीनों सुसमाचारों के पहले आधे भाग वास्तव में यीशु के ईश्वरीय अधिकार पर ध्यान देते हैं, अर्थात् उसके आश्चर्यकर्मों के द्वारा, उसके द्वारा दुष्टात्माओं को निकालने के द्वारा, उसके द्वारा की गई चंगाइयों के द्वारा, उसके प्रकृति के आश्चर्यकर्मों के द्वारा और उसकी शिक्षा के द्वारा उसके अधिकार का प्रदर्शन। और इसलिए पतरस को यह समझ में आ जाता है और वह यह पहचान लेता है कि यीशु ही सचमुच में मसीह है। और फिर उस समय से यीशु की भूमिका मसीह के रूप में प्रकट होती है जो कि दुःख उठाने वाली भूमिका है। यह कहने के बाद, मत्ती या मरकुस और लूका पतरस के अंगीकार पर थोड़ा सा अलग बल देते प्रतीत होते हैं। मरकुस और लूका में, उस समय तक किए गए सारे आश्चर्यकर्म स्पष्टतः पतरस को दिखाते हैं या पतरस के समक्ष पुष्टि करते हैं कि यीशु ही वास्तव में मसीह है; सचमुच में मसीहा है। इसलिए वह यह मान लेता है कि परमेश्वर यीशु के द्वारा काम कर रहा है और उसके मनुष्यत्व में यह पहचान लेता है कि यीशु ही मसीह है। अंगीकार के बाद मत्ती में पहली बात जो यीशु कहता है, वह यह है, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि मांस और लहू ने नहीं परंतु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रकट की है।" अतः मत्ती इस सच्चाई

> पर अधिक बल देता है कि यह निसंदेह यीशु के द्वारा किए कार्य और अधिकार के उसके चिह्नों का ईश्वरीय प्रकाशन है, परंतु यह कि केवल पतरस उसे समझ रहा है, यह इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने इसे उस पर प्रकट किया है। अतः ईश्वरीय प्रकाशन का वह भाव अधिक महत्वपूर्ण है, जैसा कि यह मत्ती के सुसमाचार में प्रतीत होता है।
>
> — डॉ. मार्क स्ट्रॉस

पतरस द्वारा मसीह के कार्य के लिए यीशु के अभिषिक्त होने की स्वीकारोक्ति या पुष्टि परमेश्वर की ओर से सीधा प्रकाशन थी। जैसा कि हम देख चुके हैं, लोग केवल उसके आश्चर्यकर्मों को देखने से यह अनुमान लगा सकते थे कि यीशु ही मसीह था। परंतु प्रेरितों के प्रवक्ता के रूप में पतरस का अंगीकार उससे कहीं बढ़कर था। यह परमेश्वर की ओर से भविष्यद्वाणी-संबंधी एक अधिकारिक प्रकाशन था। यह इस सच्चाई की एक अचूक स्वीकारोक्ति या पुष्टि थी कि यीशु ही वास्तव में मसीह था।

> सुसमाचारों में एक सबसे महत्वपूर्ण बात वह क्षण है जब शमौन पतरस यीशु के इस प्रश्न कि "तुम मुझे क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ," के प्रत्युत्तर में यह घोषणा करता है, "तू मसीह है, जीवते परमेश्वर का पुत्र। तू मसीह है।" यह एक महत्वपूर्ण क्षण है। अब इसमें महत्वपूर्ण क्या है? यह महत्वपूर्ण है,जैसा कि स्वयं यीशु कहता है कि यह प्रकाशन का क्षण है, जब स्वयं परमेश्वर ने शमौन पतरस पर कुछ ऐसा प्रकट किया है जो वह अपने आप नहीं समझ सकता था। परंतु साथ ही यह इसलिए भी है कि ऐसी चाहत और आशा भी रही है - लगभग 500 वर्षों से कि मसीहा अवश्य आएगा। और अब पतरस यह घोषणा कर रहा है कि यह व्यक्ति जो उसके सामने खड़ा हुआ है, "तू मसीहा है," और आपको केवल उस आशा और अपेक्षा के अविश्वसनीय समय का अहसास करना है, और अब एकाएक, वह क्षण आ जाता है।
>
> — डॉ. पीटर वॉकर

यह देखने के बाद कि पतरस के प्रैरितिक अंगीकार ने मसीह के कार्यभार के लिए यीशु के अभिषेक की पुष्टि की, आइए हम यीशु के महिमा में रूपांतरण को देखें।

रूपांतरण

"रूपांतरण" वह नाम है जो धर्मविज्ञानियों ने उस घटना को दिया है जब यीशु महिमा में अपने शिष्यों पर प्रकट हुआ था। यह इस सच्चाई की ओर संकेत करता है कि उसका रूप पूरी तरह से परिवर्तित हो गया था, जिसने उसकी ईश्वरीय महिमा के एक अंश को प्रकट किया। इस घटना का वर्णन मत्ती 17:1-8; मरकुस 9:2-8; और लूका 9:28-36 में किया गया है। इसका उल्लेख 2 पतरस 1:16-18 में भी पाया जाता है।

संक्षेप में, यीशु प्रार्थना के लिए पतरस, याकूब और यूहन्ना को एक पहाड़ी पर ले गया। और जब वे वहाँ थे, तो यीशु का रूप परिवर्तित हो गया। उसका चेहरा महिमा से चमकने लगा और उसके कपड़े चकाचौंध करने वाले श्वेत हो गए। जब यीशु का रूप परिवर्तित हुआ, तो मूसा और एल्लियाह वहाँ उसके साथ प्रकट हुए, और परमेश्वर की वाणी स्वर्ग से सुनाई दी, जिसने यह पुष्टि की कि यीशु उसका पुत्र था। और जब पतरस ने यह सुझाव दिया कि शिष्य यीशु, मूसा और एल्लियाह के लिए तम्बू बनाएँ, तो परमेश्वर ने यीशु को सबसे अधिक सम्मान और आज्ञाकारिता के योग्य प्रस्तुत किया। यह महत्वपूर्ण था, क्योंकि मूसा

व्यवस्था को देने वाला और परमेश्वर के लोगों को छुड़ाने वाला था, और एल्लियाह ऐसा विश्वासयोग्य भविष्यद्वक्ता था जिसने इस्राएल राष्ट्र को धर्मत्याग या पाप से दूर होने की बुलाहट दी थी। इसका अर्थ यह था कि यीशु व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की निरंतरता में खड़ा था, और यह कि वह इस्राएल के अतीत के बड़े अगुवों द्वारा रखी अपेक्षाओं को पूरा कर रहा था। परंतु इसका अर्थ यह भी था कि वह सबसे बड़ा अभिषिक्त जन था, अर्थात् दाऊद का अंतिम वारिस या उत्तराधिकारी जो पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को ला रहा था।

> रूपांतरण एक ऐसा अद्भुत दृश्य है जहाँ यीशु पहाड़ पर जाता है और उसके साथ उसके तीन चेले भी जाते हैं। और वे मसीह की इस महिमा के प्रदर्शन को देखते हैं। अतः पहले हम मसीह के इन दो स्वभावों की झलक को देखते हैं, जहाँ यह व्यक्ति रूपांतरित हो जाता है और हम उसकी महिमा के प्रदर्शन को देखते हैं जो हमेशा से उसके साथ बनी हुई थी, परंतु जैसा कि क्रिसमस के एक गीत में लिखा है, वह महिमा शरीर से ढकी हुई थी, परंतु अब हम उसके ईश्वरत्व को देखते हैं। हम उसकी महिमामय उपस्थिति के चकाचौंध कर देने वाले प्रकटीकरण को देखते हैं, इतना महिमामय कि चेले जब पहाड़ से उतरकर नीचे आए तो वे भी दमक रहे थे। परंतु जब हम वाचा की पूर्णता के बारे में सोचते हैं, तो वह सामर्थ्यशाली है, क्योंकि रूपांतरण में उसकी भेंट किसके साथ होती है? मूसा और एल्लियाह के साथ उसकी भेंट होती है। और इस प्रकार हम इसमें यीशु को मूसा की व्यवस्था की पूर्णता के रूप में, और भविष्यद्वक्ताओं के कार्य की पूर्णता के रूप में देखते है, और वह इन रूपों में अपने मसीहा होने की पहचान को पूरा करता है। इसलिए मसीहा के रूप में यीशु में पुरानी वाचा पूरी होती है, जब वह व्यवस्था के देने वाले मूसा से भेंट करता है। और फिर एल्लियाह में भविष्यद्वक्ताओं के बड़े कार्य की पूर्णता होती है, जब यीशु आता है उनसे भेंट करता है और उस अद्भुत रूपांतरण में अपने मसीहा होने की पहचान को स्थापित करता है।
>
> — डॉ. के. ऐरिक थोनेस

अब जबकि हमने मसीह के कार्यभार के लिए यीशु के जन्म और तैयारी, और उसकी सार्वजनिक सेवकाई को देख लिया है, इसलिए हम उसके दु:खभोग और मृत्यु की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं।

दु:खभोग और मृत्यु

हम शब्द "दु:खभोग" का प्रयोग उन दु:खों का उल्लेख करने के लिए करते हैं जिन्हें यीशु ने सहा, विशेषकर क्रूसीकरण से पूर्व के सप्ताह के दौरान। कई रूपों में, यह यीशु की कहानी का सबसे अंधकारमय भाग है, क्योंकि इस सप्ताह के दौरान मनुष्यजाति के द्वारा यीशु को ठुकरा दिया गया, उसके अपने अनुयायियों के द्वारा उसका इनकार किया गया और उसके साथ छल किया गया, और उस पर आरोप लगाने वालों के द्वारा उसे मार डाला गया। और इन सबसे बुरा यह हुआ कि यीशु के पिता ने जो स्वर्ग में है अपने उस ईश्वरीय क्रोध और दंड को उस पर डाला जो हमें सहना था। परंतु इस अंधकारमय कहानी में भी आशा और ज्योति की किरण है। यीशु का दु:खभोग और मृत्यु हमें यह दिखाती है कि त्रिएक

परमेश्वर हमें बचाने के लिए क्या कुछ कर सकता था। वे ईश्वरीय प्रेम और बलिदान की गवाही देते हैं जो हमारे धन्यवाद, आज्ञाकारिता और स्तुति के योग्य है।

इस अध्याय में हम यीशु के दु:खभोग और मृत्यु की अवधि को उसके यरूशलेम में आगमन से लेकर उसके क्रूसीकरण के बाद क्रब में जाने के समय तक के रूप में परिभाषित करेंगे। यद्यपि यीशु के जीवन का यह भाग केवल सप्ताहभर का था, फिर भी इसमें कई महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित हुईं। फिर से, हम इस अवधि के एक संक्षिप्त सार के साथ आरंभ करेंगे।

ईस्वी 30 के लगभग यीशु फसह के भोज के लिए यरूशलेम गया। जब वह गदहे के बच्चे पर बैठकर शहर के पास पहुँचा तो बहुत से लोगों ने उसे पहचान लिया और इस्राएल के राजा के रूप में उसका स्वागत किया। इस कारण शहर में उसका प्रवेश सामान्यतः विजयी प्रवेश के रूप में जाना जाता है। हम मत्ती 21:1-11; मरकुस 11:1-11; लूका 19:28-44; और यूहन्ना 12:12-19 में इसके बारे में पढ़ते हैं।

यरूशलेम में पहुँचने पर यीशु मंदिर में पैसे बदलने वालों के कारण क्रोधित हुआ। इस प्रकार, इसलिए भविष्यद्वाणीय दोष और राजकीय दंड के कार्य के रूप में उसने उनकी मेजों को उलट दिया और उन्हें मंदिर से बाहर खदेड़ दिया। सुसमाचार मत्ती 21:12-17; मरकुस 11:15-18; और लूका 19:45-48 में मंदिर के इस शुद्धिकरण का वर्णन करते हैं। अगले कई दिन यीशु धार्मिक नेताओं के साथ वाद विवाद करता रहा और उन सबको सिखाता रहा जो उसके पास सुनने के लिए आए।

तब फसह के यहूदी भोज से पूर्व की रात यीशु अपने शिष्यों के साथ एकत्रित हुआ और आखिरी भोज किया, जिसे अक्सर अंतिम भोज कहा जाता है। इस भोज के दौरान उसने प्रभु भोज को तब तक के लिए स्मृति और सहभागिता के रूप में निरंतर किए जाने के लिए स्थापित किया। इस घटना का वर्णन मत्ती 26:17-30; मरकुस 14:12-26; और लूका 22:7-23 में किया गया है। उसी रात उसने उन्हें शिक्षा दी, जिसे अक्सर यूहन्ना 13-16 में पाए जाने वाले उसके विदाई उपदेश के रूप में जाना जाता है, और यूहन्ना 17 में पाई जाने वाली अपनी महायाजकीय प्रार्थना के द्वारा बहुत से निर्देश दिए। उसी शाम उसका शिष्य यहूदा उसे छोड़ कर चला गया कि यीशु को धोखे से पकड़वाए, जैसे कि उसने लूका 22:3-4 और यूहन्ना 13:27-30 में यहूदी धार्मिक नेताओं के साथ योजना बनाई थी। इसके बाद यीशु और अन्य शिष्य गतसमनी के बाग में गए। जब यीशु प्रार्थना कर रहा था तो यहूदा यहूदी धार्मिक नेताओं और सिपाहियों के एक समूह को लेकर बाग में आया, और उन्होंने यीशु को पकड़ लिया। यहूदी महायाजक कैफा और यहूदी अगुवों के सामने उस पर दोष लगाया गया, और उसे रोमी राज्यपाल पिलातुस और यहूदी राजा हेरोदेस अन्तिपास के सामने मुकद्दमें के लिए खड़ा किया गया। इन परिस्थितियों के दबाव तले यीशु के शिष्य उसे छोड़ कर चले गए, और पतरस ने उसका तीन बार इनकार किया। यीशु को मारा गया, उसका उपहास किया गया और उसे मृत्युदंड दिया गया। इन घटनाओं का वर्णन मत्ती 26:31-27:31; मरकुस 14:32-15:20; लूका 22:39-23:25; और यूहन्ना 18:1-19:16 में पाया जाता है।

गिरफ्तार किए जाने के अगले दिन लगभग दोपहर के समय यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया। उसे कीलों से ठोककर क्रूस पर चढ़ाया गया और उसकी मृत्यु तक सार्वजनिक रूप से क्रूस पर रखा गया। इस बड़ी पीड़ा और दुःख के बीच उसने एक पश्चातापी चोर के प्रति दया की प्रतिज्ञा की, अपनी माता की देखभाल का प्रबंध किया, और उन लोगों के लिए परमेश्वर की से क्षमा माँगी जिन्होंने जो उसे मृत्यु के घाट उतार रहे थे। लगभग 3 बजे उसने जोर से परमेश्वर को पुकारकर अपने प्राण छोड़ दिए। इन घटनाओं का वर्णन मत्ती 27:32-54; मरकुस 15:21-39; लूका 23:26-47; और यूहन्ना 19:16-30 में पाया जाता है।

उस समय एक भूकंप ने पृथ्वी को हिला दिया और मंदिर का परदा ऊपर से लेकर नीचे तक फट गया। उसकी मृत्यु की पुष्टि करने के लिए रोमी सैनिक द्वारा उसे भाले से छेदने के बाद यीशु के शरीर को क्रूस से उतार लिया गया। क्योंकि सब्त का दिन लगभग आरंभ होने वाला था, इसलिए उसके कुछ शिष्यों ने जल्दी से उसके शव को गाड़े जाने के लिए तैयार किया और उसे एक उधार ली हुई कब्र में रख दिया।

इस भयानक दोपहर का वर्णन मत्ती 27:51-61; मरकुस 15:38-47; लूका 23:44-56; और यूहन्ना 19:34-42 में पाया जा सकता है।

हम उस अवधि से तीन घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए यीशु के दु:खभोग और मृत्यु पर विचार करेंगे : यरूशलेम में यीशु का विजयी प्रवेश, उसके द्वारा प्रभु भोज की स्थापना और उसका क्रूसीकरण। आइए पहले उसके विजयी प्रवेश को देखें।

विजयी प्रवेश

यीशु ने जकर्याह 9 की भविष्यद्वाणी को पूरा करने के लिए एक गदहे के बच्चे पर बैठकर यरूशलेम में प्रवेश किया। गदहा महत्वपूर्ण था क्योंकि शांति के समयों में राजाओं द्वारा इसकी सवारी की जाती थी, ऐसे समय में जब वे आश्वस्त होते थे कि अब उनको किसी से कोई खतरा नहीं है। इस प्रतीकात्मक कार्य का अभिप्राय यीशु के इस्राएल के अधिकारिक राजा होने के भरोसे को दिखाना था; यह उनकी पुष्टि करने के लिए भी था जो उसके राज्य के संदेश के प्रति विश्वासयोग्य थे; और उनकी ताड़ना करने के लिए जो विश्वासयोग्य नहीं थे।

जब यीशु शहर के निकट पहुँचा तो लोगों ने उसको पहचानना आरंभ किया और उसका स्वागत किया। उसका सम्मान करने के लिए बहुतों ने उसके आगे मार्ग पर खजूर की डालियाँ और यहाँ तक कि अपने वस्त्र भी बिछा दिए, और वे ऊँची आवाज में जयजयकार करने लगे। जैसा कि हम मरकुस 11:9-10 में पढ़ते हैं,

> जो उसके आगे आगे जाते और पीछे पीछे चले आते थे, पुकार पुकार कर कहते जाते थे, "होशान्ना! धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है!" "हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है;" "धन्य है! आकाश में होशन्ना!" **(मरकुस 11:9-10)**

परंतु हरेक ने यीशु का स्वागत नहीं किया। यहूदी अगुवों, जैसे कि याजकों और व्यवस्था के शिक्षकों के द्वारा उसे ठुकराया गया और उसका विरोध किया गया - वास्तव में इन लोगों को तो उसके आगमन के द्वारा सबसे अधिक उत्तेजित या रोमांचित होना चाहिए था। परमेश्वर के अभिषिक्त जन को ठुकराने के द्वारा, उन्होंने यह प्रमाणित कर दिया कि उनकी अपनी सेवकाइयाँ परमेश्वर और उसके कार्य के विरोध में थीं। यीशु के उन शब्दों को सुनिए जिन्हें नगर में प्रवेश करते हुए उसने यरूशलेम के बारे में कहे थे, और जिनका वर्णन लूका 19:42-44 में किया गया है :

> क्या ही भला होता कि तू, हाँ, तू ही, इसी दिन में कुशल की बातें जानता - परंतु अब वे तेरी आँखों से छिप गई हैं। क्योंकि वे दिन तुझ पर आएँगे कि तेरे बैरी मोर्चा बाँधकर . . . तुझ में पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ेंगे, क्योंकि तूने उस अवसर को जब तुझ पर कृपा दृष्टि की गई न पहिचाना। **(लूका 19:42-44)**

यह अस्वीकृति निरंतर जारी रही जब धार्मिक अगुवों ने यीशु के अंतिम सप्ताह के आरंभिक भाग को उससे हर तरह के प्रश्नों को पूछने में बिताया ताकि वे लोगों के सामने उसे योग्य ठहरा सकें। उन्होंने रोमी अधिकारियों को भी उकसाने का प्रयत्न किया कि वे उसका विरोध करें, और बार-बार उन्होंने यीशु के मसीह होने की पहचान और उसके अधिकार को चुनौती दी।

> उसके विजयी प्रवेश के समय और उसके बाद के दिनों में लोगों ने यीशु की स्तुति की और उसे स्वीकार किया जबकि धार्मिक अधिकारियों ने उसे ठुकरा दिया। लोगों में उसके प्रति इस तरह की विविध प्रतिक्रिया क्यों थी? हम इसे विभिन्न स्तरों पर समझ सकते हैं। सबसे पहले, अधिकारियों के पास खोने के लिए सबसे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> अधिक था। और हम वहाँ शक्ति और अधिकार के प्रति एक सामान्य समझ को देख सकते हैं। यह मानवीय स्वभाव है, और यहूदी अधिकारी अन्य मनुष्यों से भिन्न नहीं थे। जिनके पास शक्ति होती है, वे उसे अपने ही पास रखना चाहते हैं, और यीशु उनकी शक्ति के लिए खतरा बन कर आया था। उन्होंने परमेश्वर के राज्य को एक संकरे रूप में, एक राष्ट्रवादी रूप में, जाति पर केंद्रित होने के रूप में, एक गोत्र के रूप में समझा था, और वे ही ऐसे लोग थे जिनके पास खोने के लिए सबसे अधिक था। और जिस प्रकार लूका के सुसमाचार में मरियम को बताया गया था कि यह बच्चा इस्राएल में बहुतों के गिरने और उठने के लिए और ऐसा चिह्न होने के लिए ठहराया गया है जिसके विरोध में बातें की जाएँगी। यूहन्ना का सुसमाचार इस पूर्वानुमान से आरंभ होता है कि यह वह ज्योति है जो संसार में आई और अँधेरे ने उसे स्वीकार नहीं किया, कुछ अनुवाद कहते हैं, "उसे नहीं समझा," परंतु मैं सोचता हूँ कि हमें यह समझना चाहिए, और "उस पर विजय प्राप्त नहीं की"। यीशु संसार की ज्योति के रूप में आया, और अँधेरे के पास खोने के लिए सब कुछ था। और इसलिए धार्मिक अधिकारियों ने उसे प्रकट किया। परंतु हमें यह भी याद रखना चाहिए कि यह अब अधिक समय नहीं चलेगा, पवित्र सप्ताह का अंत समय आ पहुंचा था, जैसा कि हम उस समय को कहते हैं, जहाँ हरेक ने, यहाँ तक कि उस भीड़ ने भी जो यीशु का अनुसरण कर रही थी, यीशु की अपेक्षा बरअब्बा को छुड़ाने के लिए पुकारा। यीशु लोगों की अपेक्षाओं को पूरी करने के लिए नहीं आया था जैसा कि वे चाहते थे कि परमेश्वर उनके लिए करे। इसकी अपेक्षा वह उसे प्रकट करने के लिए आया था जो परमेश्वर करने के लिए दृढ-संकल्पी था, और उसका अर्थ है हमारी स्वतंत्रता के लिए खतरा, हमारी अपनी स्वायतत्ता के लिए खतरा। और हम अपने स्वयं के प्रति मरना नहीं चाहते और इस प्रकार यीशु हमारी मानवीय इच्छाओं को पलट देने के खतरे को लेकर आया। और इसलिए ही अंततः, मानवीय स्तर पर, उसको ठुकरा दिया गया।
>
> — रेव्ह. माईकल ग्लोडो

विजयी प्रवेश को देख लेने के बाद, आइए अब यीशु के दुःखभोग और मृत्यु के सप्ताह की दूसरी मुख्य घटना की ओर मुड़ें : उसके द्वारा प्रभु भोज की स्थापना।

प्रभु भोज

जैसे कि हम उल्लेख कर चुके हैं, यीशु के दुःखभोग और मृत्यु की घटनाएँ फसह के सप्ताह में घटित हुईं। इसलिए एक कार्य जो यीशु ने इस सप्ताह के दौरान किया वह था, अपने शिष्यों के साथ फसह का भोज खाना। यह उसने अपने पकड़वाए जाने और क्रूसीकरण से ठीक पहले किया, और इस घटना को सामान्यतः प्रभु भोज या अंतिम भोज के नाम से जाना जाता है। इस प्रभु भोज के दौरान यीशु ने कुछ ऐसा विशेष कार्य किया जिसे मसीही उस समय से स्मरण करते आ रहे हैं : उसने मसीही संस्कार के रूप में प्रभु भोज की स्थापना की।

जैसे कि हम पहले ही कह चुके हैं, प्रभु भोज फसह का भोज था। यह इस बात के स्मरण के लिए था कि परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया था। परंतु इस भोज के अंत में, यीशु ने फसह के प्रतीक का प्रयोग मसीह के रूप में अपने कार्य के प्रति ध्यान आकर्षित करने के लिए किया। उसने रात्रि भोजन के लिए विशेष वस्तुओं को चुना - अखमीरी रोटी और दाखरस का प्याला - और उसमें

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

नए अर्थों को जोड़ दिया। लूका 22:17-20 के अनुसार यीशु ने रोटी को अपने शरीर से जोड़ा, जिसे वह परमेश्वर के सामने पाप के बलिदान के रूप में प्रस्तुत करने वाला था। और उसने दाखरस के प्याले को अपने लहू से जोड़ दिया, जो पाप के लिए उसी बलिदान का हिस्सा होने वाला था। इससे बढ़कर, जब हम लूका 22:19 में दिए गए उसके निर्देशों के साथ मत्ती 26:29 और मरकुस 14:25 की उसकी शिक्षाओं को जोड़ देते हैं, तो हम देखते हैं कि यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाया कि वे इन वस्तुओं का प्रयोग निरंतर रूप से उसके स्मरण के लिए तब तक करते रहें, जब तक वह वापस आकर आरंभ किए हुए अपने कार्य को पूरा नहीं कर देता।

> मसीही परंपरा में प्रभु भोज का वर्णन अक्सर मसीह के दृश्य शब्दों के रूप में किया जाता है, क्योंकि वे उसको एक दृश्य के रूप में प्रदर्शित करते हैं जो क्रूस पर हुआ था। अतः रोटी का तोड़ा जाना, दाखरस का उंडेला जाना, मसीह की ओर हमारा संकेत करता है जिसका शरीर क्रूस पर कीलों से ठोका गया था, और उसका लहू हमारे लिए बहाया गया था, और जिस तरीके से ये प्रतीक कार्य करते हैं, या संस्कार कार्य करते हैं, वह मसीह की ओर हमारे ध्यान को लेकर जाता है, और यह सब जो कुछ उसने हमारे लिए किया, उसके स्मरण में उसे खाने और पीने के द्वारा उसकी मृत्यु के लाभों में सहभागी होने के लिए हमें योग्य बनाने के लिए है। और वहाँ पर एक ऐसा भाव भी है जिसमें विश्वासी यह भी महसूस करते हैं कि एक महान आत्मिक सामर्थ्य है जो तब घटित होती है जब हम इसे खाते और पीते हैं, हम उस सब के लाभों में सहभागी होते हैं जो कुछ प्रभु ने हमारे लिए उस समय किया।
>
> — डॉ. साइमन विबर्ट

प्रभु भोज के अर्थ के दो पहलू हैं जिनका हमें विशेषकर उल्लेख करना चाहिए, आइए मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के साथ इसके संबंध से आरंभ करें।

प्रायश्चित का बलिदान

प्रभु भोज के मौलिक प्रतीक को समझना आसान है। रोटी यीशु की देह को प्रस्तुत करती है, और दाखरस उसके लहू को प्रस्तुत करता है। परंतु ये क्यों महत्वपूर्ण हैं? क्योंकि लूका 22:19 के अनुसार उसका शरीर हमारे लिए दिया गया और उसका लहू बहुतों के पापों की क्षमा के लिए उंडेला गया, जैसा कि हम मत्ती 26:28 में पढ़ते हैं। दूसरे शब्दों में, उसका लहू और शरीर इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये वे हैं जिन्हें उसने क्रूस पर परमेश्वर के सामने अर्पित कर दिया, ताकि हमारे पापों के लिए प्रायश्चित का बलिदान कर सके। हम कुछ ही क्षणों में इस विषय का अध्ययन करेंगे जब हम क्रूसीकरण पर विचार विमर्श करेंगे।

प्रभु भोज के इस अर्थ का दूसरा पहलू जिसका हम उल्लेख करेंगे, वह यह है कि यह नई वाचा के उदघाटन को दर्शाता है।

नई वाचा

सुनिए लूका 22:20 में यीशु ने क्या कहा :

> यह कटोरा मेरे लहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है। (लूका 22:20)।

यहाँ यीशु ने नई वाचा के नवीनीकरण के विषय में कहा है जिसके बारे में भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने यिर्मयाह 31:31-34 में पहले से ही कह दिया था।

नई वाचा उस वाचा की प्रतिज्ञाओं की निश्चितता और नवीनीकरण है जो आदम, नूह, अब्राहम, मूसा और दाऊद के दिनों में परमेश्वर ने की थीं। परमेश्वर की वाचा के पहले से किए हुए प्रबंधों ने उसके लोगों के प्रति परमेश्वर की भलाई को प्रकट किया, परंतु साथ ही विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता की मांग करते हैं, और उन लोगों को आशीषों को देने की प्रतिज्ञा करते हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और उन्हें श्राप देने की जो उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते हैं। और मसीह होने के रूप में यीशु परमेश्वर की उसके लोगों के साथ बाँधी गई वाचा के अंतिम चरण का प्रबंधक था - वह चरण जिसमें वाचा उसके लहू के बहाए जाने के द्वारा "प्रमाणित" या "पक्की" हुई। जैसा कि हम इब्रानियों 9:15 में पढ़ते हैं :

> मसीह इसी कारण नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनंत मीरास को प्राप्त करें - अब क्योंकि उसकी मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए हुई है। (इब्रानियों 9:15)

अब जबकि हमने यीशु के विजयी प्रवेश और उसके द्वारा प्रभु भोज की स्थापना को देख लिया है, इसलिए हम उसके क्रूसीकरण की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं।

क्रूसीकरण

क्रूसीकरण मृत्यु दंड देने का तरीका था जिसका प्रयोग प्राचीन रोमी साम्राज्य में किया जाता था। इसमें दोषियों को क्रूस के साथ बाँध दिया जाता था, या उन्हें इस पर कीलों से ठोक दिया जाता था, जैसा कि यीशु के साथ किया गया था, फिर उन्हें तब तक क्रूस पर टाँग कर रखा जाता था जब तक कि वे मर न जाएँ, विशेषकर दम घुटने से। यीशु का क्रूसीकरण निसंदेह विशेष था, क्योंकि इसने पाप के लिए प्रायश्चित के बलिदान का कार्य भी किया। मसीह होने के नाते यह उसका दायित्व था कि वह अपने लोगों के बदले में मरे, जैसा कि हम इब्रानियों 9:11-28 में पढ़ते हैं।

क्रूसीकरण से संबंधित बहुत सी धर्मशिक्षाएँ हैं और हम उन सबका उल्लेख नहीं कर सकते, इसलिए हम स्वयं को केवल दो धर्मशिक्षाओं तक ही सीमित रखेंगे : हमारे पापों का यीशु पर दोषारोपण; और वास्तविकता यही है कि वह पाप के विरूद्ध ईश्वरीय दंड के फलस्वरूप मरा। हम दोषारोपण के विचार से आरंभ करेंगे।

दोषारोपण

दोषारोपण का साधारण अर्थ है किसी कार्य को सौंपना या गिनना। परंतु जब हम क्रूसित यीशु पर अपने पापों के दोषारोपण के बारे में बात करते हैं, तो हम उस कार्य की ओर संकेत करते हैं जिसमें परमेश्वर ने पापियों के दोष को यीशु के व्यक्तित्व पर लाद दिया था। अतः जब हम कहते हैं कि हमारे पापों को यीशु पर लाद दिया गया, तो हमारे कहने का अर्थ है कि परमेश्वर ने हमारे पापों का आरोप उस पर लगाया। यीशु ने वास्तव में कभी कोई पाप नहीं किया था, और उसका व्यक्तित्व कभी भी पाप से भ्रष्ट नहीं हुआ था। परंतु वैधानिक दृष्टिकोण से परमेश्वर ने यीशु को इस प्रकार से देखा कि मानो उस पर लादा गया हर पाप उसी ने व्यक्तिगत रूप में किया हो।

पुराने नियम की पाप-बलि के तरीकों की निरंतरता में यीशु ने अपने लोगों के बदले स्वयं को क्रूस पर बलिदान कर दिया। इब्रानियों की पुस्तक इसके बारे में अध्याय 9-10 में विस्तार से बताती है। हमारे विकल्प या स्थानापन्न के रूप में मसीह की भूमिका इस बात में प्रकट है कि बाइबल अक्सर उसे हमारे बलिदान के रूप में दर्शाती है, जैसे कि रोमियों 3:25; इफिसियों 5:2; और 1 यूहन्ना 2:2 में। इसी कारण

मत्ती 20:28; 1 तीमुथियुस 2:6; और इब्रानियों 9:15 जैसे स्थानों में उसे हमारी छुड़ौती या छुटकारे का दाम कहा गया है।

हमारे पापों के उस पर लादे जाने से पहले यीशु निर्दोष और सिद्ध था। परंतु यह चाहे जितना भी विचित्र लगता हो, एक बार जब हमारे पाप उसके लेखे में गिन लिए गए तो परमेश्वर ने उसे उन सभी पापों के दोषी के रूप में देखा जो उस पर लाद दिए गए थे। 2 कुरिन्थियों 5:21में पौलुस इसी विषय में बात कर रहा था जब उसने यह कहा :

> जो पाप के लिए अज्ञात् था उसी को परमेश्वर ने हमारे लिए पाप ठहराया। (2 कुरिन्थियों 5:21)

> और जब हम ऐसे प्रश्नों को पूछना आरंभ करते हैं : "कि क्या यह ठीक होगा, क्या यह सही होगा, क्या हमारे पापों को मसीह पर लाद देना परमेश्वर के लिए धार्मिकतापूर्ण होगा? हम मानवीय न्यायालय में जाते हैं और सोचते हैं, "क्या हम हत्या के विषय में किसी का दोष किसी ऐसे व्यक्ति डाल सकते हैं जिसने हत्या न की हो?" उत्तर होगा "नही"। न्याय के मानवीय तराजू के अनुसार ऐसा करना गलत होगा। परंतु परमेश्वर के न्याय के बारे में पहली बात हम यह जानते हैं कि वह सिद्ध है और क्योंकि वह सिद्ध है, इसलिए हम जानते हैं कि वह जो भी करता है वह सही होता है। परंतु बाइबल हमें वास्तव में बताती है कि यह सही क्यों है। अब, उदाहरण के लिए, यदि परमेश्वर ने किसी को ऐसे ही चुन लिया होता और मनमाने ढंग से उस पर मेरा पाप डाल दिया होता तो वह सही नहीं होता, वह न्यायोचित नहीं होता। वह परमेश्वर की धार्मिकता के उसके स्तर को पूरा नहीं करता। परंतु तब क्या यदि परमेश्वर ने मनुष्यजाति की सृष्टि से पूर्व ही यह निर्धारित कर लिया हो कि वह पापी मनुष्यजाति को उसके पुत्र के द्वारा छुड़ाएगा, अर्थात् वही एकमात्र जो अपनी सिद्ध धार्मिकता और अपनी सिद्ध आज्ञाकारिता के कारण वास्तव में हमारे पापों को अपने ऊपर ले सकता है और हमारे पापों के लिए प्रायश्चित का बलिदान कर सकता है? और तब क्या यदि यह मनमाने ढंग से दिया हुआ कार्य न हो, अर्थात् किसी को अनिच्छा से दिया जाने वाला कार्य जिसे बस यही बताया गया हो, "तुम्हें पाप का भार उठाना पड़ेगा।" तब क्या यदि यीशु ने सुसमाचार में ऐसा कहा हो, "कोई मुझसे मेरे प्राण नहीं लेता, परंतु मैं अपनी इच्छा से अपनी भेड़ों के लिए अपने प्राण देता हूँ"? तब आप समझ जाते हैं कि परमेश्वर का न्याय इस बात से अधिक कहीं सिद्ध प्रकट नहीं हो सकता कि उसने अपनी सिद्ध योजना में अपने ही पुत्र के द्वारा पापी मनुष्यजाति को छुड़ाया, और वह पुत्र अपनी इच्छा से अपना जीवन दे देगा और हमारे पापों को अपने ऊपर ले लेगा कि परमेश्वर के साथ हमारा मेल-मिलाप हो जाए। परमेश्वर का न्याय सिद्ध है। जो कुछ क्रूस पर हुआ उस चित्र की तुलना में और अधिक सिद्ध कुछ नहीं हो सकता।
>
> — डॉ. आर. एल्बर्ट मोहलर, जूनियर

अब जबकि हमने अपने पापों के मसीह पर दोषारोपण को देख लिया है, इसलिए आइए क्रूसीकरण से संबंधित हमारे दूसरे विषय की ओर मुड़ें : ईश्वरीय दंड।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दंड

मानवीय मृत्यु हमेशा से ही पाप के विरूद्ध ईश्वरीय दंड रही है। हम इसे उत्पत्ति 3:17-19; यहेजकेल 18:4; और रोमियों 5:12-21 में देखते हैं। मृत्यु ने मनुष्यजाति में तब प्रवेश किया जब आदम ने उत्पत्ति 3 में पाप किया। और यह तब से निरंतर जारी है क्योंकि आदम का पाप हम पर डाल दिया गया है।

यीशु की मृत्यु भी पाप के विरूद्ध एक ईश्वरीय दंड थी। परमेश्वर द्वारा हमारे पाप को उस पर डालने से पहले यीशु मर नहीं सकता था। परंतु एक बार जब क्रूस पर हमारे पाप उस पर डाल दिए गए, तो उसकी मृत्यु न केवल संभव परंतु आवश्यक भी बन गई। यही एकमात्र न्यायोचित प्रतिक्रिया थी जो परमेश्वर इतने बड़े पाप के प्रति दे सकता था।

इस दंड के भाग के रूप में यीशु अपने पुनरुत्थान से पहले तीन दिनों तक मृत्यु की शक्ति के अधीन रहा। परंतु शुभ संदेश यह है कि उसने हमारे पापों के विरुद्ध परमेश्वर के संपूर्ण प्रकोप को अपने ऊपर ले लिया है, इसलिए अब कोई भी ईश्वरीय दंड बाकी नहीं बचा है जिसका हमें खतरा हो। जैसा कि यीशु ने यूहन्ना 5:24 में कहा :

> जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनंत जीवन उसका है; और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परंतु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। (यूहन्ना 5:24)

> यदि मुझे पाप को परिभाषित करना होता, तो मैं उसके एक विकृत रूप को प्रस्तुत करता। परंतु पाप के प्रति परमेश्वर की समझ और दंड की माँग करती इसकी गंभीरता वास्तव में मेरे लिए एक शुभ संदेश है। निसंदेह, मैं अपने पापों को देखना नहीं चाहता। मैं अपने जीवन या संसार में पाप के प्रभावों को नहीं चाहता। परंतु जब तक परमेश्वर उसे दंडित नहीं करता, इसका कभी वास्तव में निपटारा नहीं होता। मैं पाप के स्वभाव को दूर करने का कोई न कोई तरीका ढूंढता ही रहूँगा कि मैं उसे दूर कर सकूँ। परंतु परमेश्वर के दंड का अर्थ है कि वह ठीक ठीक जानता है कि पाप क्या है, मैंने क्या किया है, और यह भी कि पाप मेरे चारों ओर मुझमें क्या करता है। और इसलिए मेरी उन आवश्यकताओं और उन मुश्किलों और समस्याओं के समाधानों के लिए अपनी बलिदानी मृत्यु में प्रभु का स्वयं को अर्पित कर देना ही मेरी पाप की समस्या का सटीक उत्तर है। उस दंड के बिना, उस समझ के बिना और उस भयानक चीज पाप के साथ धर्मी व्यवहार के बिना कोई छुटकारा नहीं होगा। इसलिए मसीह का प्रायश्चित का बलिदान ही एकमात्र शुभ संदेश है। इस संसार के प्रत्येक धर्म ने पाप या पाप के दर्शन नामक उस चीज का निपटारा करने का प्रयास किया है कि उससे छुटकारा पाए या उससे शुद्ध हुआ जाए या शरीर का इनकार किया जाए, पर ऐसा नहीं होता। परंतु यीशु अपने संपूर्ण धर्मी न्याय के साथ आता है, और वह सही-सही बताता है कि पाप क्या है। और जब वह ऐसा करता है, तो वह उसे पूरा का पूरा क्रूस पर अपने ऊपर ले लेता है। इसलिए मसीहियों के लिए, और हर किसी के लिए यह सबसे उत्तम समाचार है।
>
> — डॉ. बिल ऊरी

> यीशु परमेश्वर का देहधारी वचन है। वह वचन का देहधारी होना है। वह वचन जो परमेश्वर के साथ था, वह वचन परमेश्वर था। वह वही पुत्र है जो पिता के हृदय से निकल कर आया है कि पिता की पहचान कराए। महत्वपूर्ण है कि हम यह स्मरण

> रखें, क्योंकि जब हम उसे क्रूस पर अपने प्राण को देते हुए, हमारे दंड को अपने ऊपर लेते हुए, हमारे पापों के विरूद्ध परमेश्वर के दंड को और हमारे दंड को अपने जीवन में लेते हुए देखते हैं, तो पाते हैं कि पुत्र में स्वयं परमेश्वर ही है जो परमेश्वर के प्रति हमारे विद्रोह और विश्वासघात के सामने अपने ही पाप के विरुद्ध अपने ही दंड को सह रहा है। शुभ संदेश क्या है? परमेश्वर हमसे इतना प्रेम करता है कि वह इतनी प्रतीक्षा नहीं करेगा कि हम स्वयं अपने पापों का मूल्य चुकाएँ, जिससे हम उसे जान सकें। वह इतनी प्रतीक्षा नहीं करेगा कि हम उस खाई को भरें जो हमें परमेश्वर से अलग करती है। बल्कि वह हमारे पास आता है और अपने ही अस्तित्व में हमारे पापों की गंदगी, दयनीयता, दुष्टता और बुराई को सहन करता है ताकि वह हमारे ऊपर न केवल अपनी क्षमा बल्कि अपनी ईश्वरीय उपस्थिति को और हमारे हृदयों में अपने ईश्वरीय जीवन और अपने ईश्वरीय प्रेम को उंडेले। यह वास्तव में एक शुभ संदेश है।
>
> — डॉ. स्टीफन ब्लैकमोरे

हमारे अध्याय में अब तक हमने इन अवधियों के दौरान मसीह या मसीहा के रूप में यीशु के कार्य को देखा है : उसका जन्म और तैयारी, उसकी सार्वजनिक सेवकाई, एवं उसका दु:खभोज और मृत्यु। अतः अब हम अपने अंतिम विषय को संबोधित करने के लिए तैयार हैं : मसीह के रूप में यीशु के ऊँचे पर उठाए जाने की अवधि।

ऊँचे पर उठाया जाना

हम यीशु के ऊँचे पर उठाए जाने को उसके पुनरुत्थान से लेकर उसके भावी दृष्टिगोचर पुनरागमन के समय के रूप में दर्शाएँगे। हम इस समय से लेकर हुई घटनाओं के संक्षिप्त वर्णन से आरंभ करेंगे, और फिर उनमें से कुछ का अध्ययन और गहराई से करेंगे।

उसके क्रूसीकरण और गाड़े जाने के बाद वाले सप्ताह के पहले दिन यीशु मृतकों में से जी उठा। चालीस दिनों तक वह अपने कई शिष्यों को दिखाई देता रहा। उसने उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखाया, पवित्रशास्त्र की पूर्णता में अपनी भूमिका को स्पष्ट किया, और प्रेरितों के द्वारा अपनी कलीसिया के अगुवों को स्थापित किया। ये घटनाएँ मत्ती 28, मरकुस 16, लूका 24, यूहन्ना 20-21 और प्रेरितों के काम 1:1-11 में पाई जाती हैं।

इन चालीस दिनों के बाद यीशु ने अपने लोगों को आशीष दी और दृश्य रूप में स्वर्ग पर चढ़ गया, और वहाँ स्वर्गदूतों ने यह घोषणा की कि वह फिर वापस आएगा। इन तथ्यों का वर्णन लूका 24:36-53 और प्रेरितों के काम 1:1-11 में किया गया है।

स्वर्ग पर चढ़ चढ़ने के बाद यीशु ने पिता के समक्ष अपनी मृत्यु को प्रायश्चित के बलिदान के रुप में प्रस्तुत किया और पिता के दाहिने हाथ विराजमान हो गया। इस बात ने उसके लोगों के विषयों पर उसके राज्य को आरंभ किया, और यह तब तक जारी रहेगा जब तक वह अपने शत्रुओं को दंडित करने और अपने लोगों को नए आकाश और नई पृथ्वी के साथ आशीषित करने अपनी महिमा में वापस नहीं आ जाता। हम इन विवरणों को इफिसियों 1:20-22; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-10; और प्रकाशितवाक्य 20:11-22:7 जैसे स्थानों में पाते हैं।

हम यीशु के ऊँचे पर उठाए जाने के चार पहलुओं की खोज करेंगे। पहला, हम उसके पुनरूत्थान को देखेंगे। दूसरा, हम उसके स्वर्गारोहण का उल्लेख करेंगे। तीसरा, हम उसके स्वर्गीय राज्य या शासन पर ध्यान देंगे। और चौथा, हम उसके दृश्य पुनरागमन पर ध्यान केंद्रित करेंगे। आइए मृतकों में से उसके पुनरुत्थान के साथ आरंभ करें।

पुनरूत्थान

मृत्यु एक सबसे बड़ी त्रासदी है जिसका अनुभव मानवीय प्राणी करते हैं, और यह इस संसार में पाप का सबसे बुरा प्रकटीकरण है। परंतु शुभ संदेश यह है कि परमेश्वर के अभिषिक्त मसीह ने हम सबके लिए मृत्यु पर जय पा ली। जब वह आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा कब्र में से जी उठा, तो उसने सारी सृष्टि के सामने प्रमाणित कर दिया कि वह वास्तव में परमेश्वर का प्रिय पुत्र और उसके राज्य का वारिस या उत्तराधिकारी है। और इससे भी अधिक अद्भुत यह है कि उसने अपने सभी विश्वासयोग्य अनुयायियों के लिए भविष्य के पुनरूत्थान और आशीषों को सुनिश्चित कर दिया।

यीशु के पुनरूत्थान के बहुत से महत्वपूर्ण पहलू हैं और हम उन सबका उल्लेख यहाँ नहीं कर सकते हैं। इसलिए हम अपना ध्यान केवल दो पर ही केंद्रित करेंगे, और हम इससे आरंभ करेंगे कि इसने परमेश्वर की छुटकारे की योजना को कैसे आगे बढाया।

छुटकारे की योजना

मनुष्यजाति और शेष सृष्टि को छुड़ाने की परमेश्वर की योजना इस बात पर निर्भर थी कि वह दाऊद के वंश, अर्थात् मसीह के राजत्व के अधीन पृथ्वी पर अपने राज्य की स्थापना की वाचाई प्रतिज्ञाओं को पूरा करे। परंतु यदि यीशु मृत ही रहता, तो वह ऐसा नहीं कर सकता था। इस भाव में, यीशु का पुनरुत्थान एक महत्वपूर्ण कदम था जिसने परमेश्वर को उसकी वाचाई प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के योग्य बनाया। यही एक कारण है कि नया नियम पुनरूत्थान को मसीह के रूप में यीशु की भूमिका की निश्चितता कहता है, जैसा कि हम लूका 24:45-46; यूहन्ना 2:17-22; प्रेरितों के काम 17:3; और रोमियों 1:1-4 में देखते हैं।

यीशु के पुनरूत्थान का दूसरा पहलू, जिसका हम यहाँ उल्लेख करेंगे, वह यह है कि यह विश्वासियों को उद्धार की अनेक विभिन्न आशीषें प्रदान करता है।

उद्धार की आशीषें

नया नियम यीशु के पुनरूत्थान को उन विभिन्न प्रकार की आशीषों के साथ जोड़ता है जिन्हें हम अपने उद्धार के भाग के रूप में प्राप्त करते हैं। इसका परिणाम होता है हमारी धार्मिकता, जो कि रोमियों 4:25 में हमारे पापों की क्षमा है। यह हमारी आत्माओं के नए किए जाने का स्त्रोत है, और यह 1 पतरस 1:3-5 के अनुसार हमारे अनंत मीरास के द्वार को खोल देता है। यह हमारे शरीरों और जीवनों में भले कामों और मसीह के प्रति एक सच्ची गवाही को उत्पन्न करता है, जैसा कि हम 2 कुरिन्थियों 4:10-18 में पढ़ते हैं। और यह विश्वासियों के भावी देहसहित पुनरूत्थान का स्त्रोत है,जब हमें यीशु के समान महिमामय शरीर मिलेंगे, जैसा कि हम रोमियों 6:4-5 और 1 कुरिन्थियों 15:42-53 में पढ़ते हैं। यद्यपि मसीही इसके बारे में इस तरह से कम ही सोचते हैं, फिर भी यीशु का पुनरूत्थान उद्धार की उन कई आशीषों के लिए आवश्यक है जिनका हम पहले से ही आनंद ले रहे हैं, और जो हमें भविष्य में मिलने वाली हैं।

> यीशु मसीह का मृतकों में से पुनरुत्थान नए नियम का केन्द्रीय विषय है। और इसमें से कई तरह की आशीषें निकलती हैं। सबसे पहले, पुनरूत्थान हमें सिखाता है कि यीशु कौन है। यह उसकी मसीहा के रूप में, और प्रभु के रूप में, और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमेश्वर के पुत्र के रूप में स्थापना है। इसलिए यह हमें यीशु के बारे में महत्वपूर्ण बातें सिखाता है, और उनमें बड़ी-बड़ी आशीषें हैं। परंतु जब हम आगे बढ़ते हैं, तो मसीहियों के लिए सबसे मुख्य बात यह है कि इसका अर्थ है कि यीशु मसीह आज भी जीवित है। वह मृतकों में से जी उठा है, और इसका अर्थ यह है कि वह ऐसा है जो इस समय भी वास्तव में जान सकता है और भेंट कर सकता है। इससे बढ़कर इसका अर्थ यह है कि यीशु की सामर्थ्य, उसके जी उठने की सामर्थ्य, हमारे लिए उपलब्ध है। और हम विश्वास करते हैं कि पवित्र आत्मा के द्वारा यह नया जीवन हममें वास करने के लिए आता है। इसलिए इसका अर्थ यह है कि एक मसीही के रूप में जीना अपनी शक्ति से यीशु का अनुसरण करने का प्रयास करना नहीं है। इसका अर्थ है कि उसके जी उठने की सामर्थ्य हममें वास करती है। परंतु इसमें इससे भी अधिक कुछ और है। मेरे कहने का अर्थ है कि पुनरूत्थान हमें भविष्य के लिए अविश्वसनीय आशा देता है, और पुनरूत्थान वह नमूना है कि जब हम मरेंगे तो हमारे साथ क्या होगा। और हम यीशु के पुनरुत्थान में परमेश्वर के प्रण को देखते हैं कि मृत्यु अंत नहीं है, अर्थात् कब्र के बाद नया जीवन आता है, जो कि पुनरूत्थान है और शारीरिक जीवन के साथ है। और हर पीढ़ी के मसीहियों के लिए निसंदेह रूप से अविश्वसनीय आशा दी गई है, जब वे, अर्थात् हम, मानवीय मृत्यु का सामना करते हैं। यह यीशु में भरोसा करना है कि वह हमें मृत्यु से अपने जीवन में लेकर आएगा। और मैं एक और बात कहना चाहता हूँ - वह यह कि पुनरुत्थान परमेश्वर द्वारा अपनी सृष्टि को नया करने का प्रण भी है। यीशु का शरीर एक भौतिक शरीर है, और वह उसके बाद से आत्मिक प्राणी के रूप में ही प्रकट नहीं होता है, उसके पास एक भौतिक शरीर है। और यह वह चिह्न है कि परमेश्वर मनुष्यों के विषयों में रूचि लेता है, और वह इसे छुड़ाने वाला है और इसे नया करने वाला है। सृष्टि बुरी नहीं है; यह ऐसी है जिसे नया किया जाने वाला है। और रोमियों 8 में स्पष्ट रूप से सिखाया हुआ पाते हैं कि जहाँ पौलुस कहता है कि सारी सृष्टि नई होने वाली है। यह पुनरूत्थान ही है जो हमें वह सुराग और भरोसा देता है।

— डॉ. पीटर वॉकर

यीशु के पुनरूत्थान को मन में रखते हुए, आइए उसके स्वर्गारोहण के बारे में अध्ययन करें।

स्वर्गारोहण

यीशु का स्वर्गारोहण तब हुआ जब वह आश्चर्यजनक तरीके से स्वर्ग में, परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में उठा लिया गया। अब निसंदेह उसके ईश्वरीय स्वभाव में, परमेश्वर का पुत्र हर समय हर स्थान पर उपस्थित है। परंतु अपने मानवीय स्वभाव के अनुसार स्वर्गारोहण यीशु की देह और प्राण को इस पार्थिव क्षेत्र से स्वर्गीय क्षेत्र में ले गया जहाँ स्वर्गदूतों और सो गए विश्वासियों की आत्माओं का वास है। पवित्रशास्त्र इस घटना का वर्णन लूका 24:50-53 और प्रेरितों के काम 1:9-11 में करता है, और कई अन्य स्थानों में इसकी ओर संकेत करता है।

हम मसीह के रूप में यीशु की भूमिका के उन दो पहलुओं की खोज करेंगे जिन्हें उसके स्वर्गारोहण के साथ जोड़ा जा सकता है : प्रैरितिक अधिकार जो यीशु ने अपने शिष्यों को दिया और परमेश्वर के

दाहिनी ओर उसके अपने सिंहासन पर विराजमान होना। आइए पहले प्रैरितिक अधिकार के विषय पर ध्यान दें।

प्रैरितिक अधिकार

पाप के लिए प्रायश्चित का बलिदान करने और सारी धार्मिकता को पूरा करने की विशेष उपलब्धि को प्राप्त करने के फलस्वरूप परमेश्वर ने यीशु को सारी सृष्टि के ऊपर अद्वितीय अधिकार और सामर्थ्य प्रदान की। जैसा कि मत्ती 28:18 में यीशु ने अपने शिष्यों को बताया :

> स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। (मत्ती 28:18)

इससे बढ़कर, अपने स्वर्गारोहण के समय यीशु ने इस पृथ्वी पर रह रहे अपने शिष्यों को अपना कुछ अधिकार दिया ताकि वे अटूट अधिकार के साथ उसके लिए बोल सकें, जिससे कि कलीसिया की स्थापना और निर्माण हो। जिन प्रेरितों ने यह अधिकार पाया, वे उसके वास्तविक ग्यारह विश्वासयोग्य शिष्य, विश्वासघाती यहूदा के स्थान पर प्रेरितों के काम 1:26 में चुना गया मत्तियाह और पौलुस थे, जिसने विशेष प्रकाशन के द्वारा इस अधिकार को प्राप्त किया था।

दिए गए अधिकार के फलस्वरूप, ये प्रेरित नए पवित्रशास्त्र को लिखने और स्वीकार करने में समर्थ हुए, और मसीही धर्मशिक्षाओं पर अचूकता से बोल सके। जैसा कि हम प्रेरितों के काम 1:24-26 में देखते हैं, यह अधिकार उन शिष्यों के लिए विशेष था जिन्होंने इसे प्रत्यक्ष रूप से मसीह से प्राप्त किया था, और किसी भी मानवीय तरीके से किसी को भी आगे स्थानांतरित नहीं किया जा सकता था। फलस्वरूप, ऐसे और कोई प्रेरित नहीं रहे है जिनके पास उसी स्तर का अधिकार रहा हो।

पौलुस प्रेरित ने इस सच्चाई के बारे में इफिसियों 2:19-20 में बात की है, जहाँ उसने कहा कि विश्वव्यापी कलीसिया यह है :

> परमेश्वर का घराना, और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो। (इफिसियों 2:19-20)

आधिकारिक प्रेरित कलीसियाई अधिकारियों में विशेष स्तर के लोग थे, जो सार्वभौमिक कलीसिया के आरंभिक समय से ही संबंधित थे।

प्रैरितिक अधिकार की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, हम यीशु के स्वर्गारोहण की दूसरी विशेषता को देखने के लिए तैयार हैं : उसका सिंहासन पर विराजमान होना।

सिंहासन पर विराजमान होना

> अब मसीह का परमेश्वर के साथ स्वर्ग में बैठने का अर्थ यह है कि मसीह परमेश्वर और उसके सारे लोगों के शत्रुओं पर हर जगह विजयी ठहरा है। और विशेषकर इफिसियों की पत्री में जहाँ पौलुस अध्याय दो में यह कहता है, जिन शत्रुओं के बारे में पौलुस बात कर रहा है वे इस ब्रह्मांड के आकाशीय शत्रु हैं, अर्थात् इस वर्तमान अंधकार के युग के शासक और प्रधान। उन शक्तियों पर मसीह के मृतकों में से पुनरूत्थान के द्वारा विजय प्राप्त कर ली गई है, और मसीह पिता के दाहिने हाथ विराजमान है। और अद्‌भुत शुभ संदेश यह है कि हम भी परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हैं। अतः मसीही होने के नाते हमारे पास भी ब्रह्मांड की सारी दुष्ट और बुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त है। हमें अदृश्य शक्तियों से डरने की आवश्यकता नहीं है जैसा कि कुछ लोग दावा करते हैं कि उनका हमारे ऊपर अधिकार है। हमें

> उनसे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि मसीह ने इन सब पर विजय प्राप्त की है, और हम भी उसके साथ विजयी हैं।
>
> — डॉ. फ्रेंक थेलमैन

जब यीशु का स्वर्गारोहण हुआ, तो उसने अपने बलिदान को स्वर्गीय मंदिर में प्रस्तुत किया, और फिर पिता के दाहिने हाथ बैठ गया। घटनाओं के इस क्रम का उल्लेख इब्रानियों 1:3 9:11-14 और 10:12-14 में किया गया है।

पिता के दाहिने हाथ बैठने के कार्य ने यीशु के सिंहासन पर बैठाए जाने को स्वर्ग में पिता परमेश्वर के वासल राजा या सेवक राजा के रूप में स्थापित किया। सम्मान के इस मसीहा-संबंधी स्थान की भविष्यद्वाणी सबसे पहले भजन 110 में राजा दाऊद ने की थी। और नया नियम इसका बार-बार उल्लेख करता है कि यह अब यीशु का है। उदाहरण के लिए, हम इसे मरकुस 16:19; लूका 22:69; इफिसियों 1:20-21; और 1 पतरस 3:22 में देखते हैं।

सिंहासन पर बैठाए जाने ने यीशु द्वारा मसीह के कार्य की धारणा को पूरा कर दिया। उसे उसके देहधारण से पहले चुन लिया गया था और उसके बपतिस्मा के समय उसका अभिषेक किया गया था। परंतु उसके स्वर्गारोहण पर ही उसने वास्तव में सिंहासन को लिया और औपचारिक क्षमता से शासन करना आरंभ किया।

> और प्रभु के कार्यों के प्रत्येक पहलू और उसकी सारी गतिविधियाँ, हमारे समय के प्रत्येक पहलू के साथ उसका व्यक्तिगत संबंध छुटकारे के लिए महत्वपूर्ण है। यह वास्तविकता कि वह पिता के दाहिने हाथ सिंहासन पर विराजमान है, आत्मिक तौर पर कहें तो हमारे लिए एक बड़ी प्रतिज्ञा है कि पूरे इतिहास के अंत में हमारे लिए विजय है। वह ऐसा राजा है जिसने हरेक युद्ध को जीत लिया है। हम इसका अभी अनुभव न भी करें, परंतु वास्तव में उसने ऐसा किया है। यही सार्वभौमिक अवधारणा है। संपूर्ण ब्रह्मांड का परिवर्तन, उसका संपूर्ण प्रभुत्व, यह सब कुछ हमारे लिए चित्रित किया गया है जब वह अपने प्रभुत्व में सिंहासन पर विराजमान होकर शासन कर रहा है। परंतु यीशु कौन है इसके बारे में याद करने की एक बड़ी बात यह है कि वह जो शासन करता है, महिमामय व्यक्ति है। परमेश्वर का पुत्र मनुष्य का पुत्र बन गया, ताकि उसके देहधारण का कभी अंत न हो। वह केवल कोई आत्मा ही नहीं बना। वह मनुष्यजाति को स्वर्ग में ले गया, और वह जो पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है वही यहूदी बढ़ई है जो परमेश्वर का पुत्र है। वह हमेशा हमारे लिए मध्यस्थता' करने के लिए जीवित है। उसमें उसके प्रभुत्व, उसकी सर्वोच्चता, उसके अधिकार, और उन सब पर उसकी विजय का मिश्रण है जो अब तक हुआ है। परंतु उसकी अविश्वसनीय घनिष्ठता, हमें अपने में समा लेना, उसका मध्यस्थता का जीवन, सामर्थी प्रार्थना और हमारे जीवनों के लिए उसकी चिंता निरंतर जारी है। इस प्रकार यह सिद्ध उद्धारकर्त्ता हमारे लिए सिंहासन पर विराजमान है। हाँ, उसमें वह सारी योग्यता है कि उसकी आराधना और प्रशंसा की जाए, परंतु उसकी यही योग्यता इस अविश्वसनीय आत्म-त्याग के अद्‌भुत भाव के साथ हमारे दृष्टिकोण से भी संतुलित होती है। मैंने उन सारे भजनों के बारे में सोचा जो वर्षों से अद्‌भुत रूप से उसके लहू बहते हुए ज़ख्मों के बारे में वर्तमान काल में बात करते हैं। मेरी सबसे पहली प्रतिक्रिया यह थी, ठीक है उसका लहू बहा और वह मर गया। परंतु उसके सिंहासन की वास्तविकता के गीत में वे कहते हैं, लहू

> बहते हुए पाँच घावों को वह सहता है, जो उसने कलवरी पर पाए। और मैं सोचता हूँ कि वे यह कहने का प्रयास कर रहे हैं कि उसके देहधारण को न भूलें, कि उसके सिंहासन का जीवन एक देहधारी मसीह है जो स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु है, परंतु साथ ही हमारी प्रतिदिन की आवश्यकताओं का भी प्रभु है। और इसलिए जब आप उसके सिंहासन पर के कार्य के बारे में आज भी सोचते हैं तो विश्वासी होने के नाते इसका बहुत बड़ा आशय है।
>
> — डॉ. बिल ऊरी

यीशु के ऊँचे पर उठाए जाने का उसके पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के आधार पर अध्ययन कर लेने के बाद, आइए अब हम उसके स्वर्ग में चल रहे निरंतर शासन पर ध्यान दें।

शासन

शब्द "शासन" धर्मविज्ञान में एक तकनीकी शब्द है जो स्वर्ग में वैभव और सामर्थ्य के स्थान से यीशु के निरंतर चलते रहने वाले शासन और राज्य को दर्शाता है। यह उन सब बातों को दर्शाता है जिन्हें यीशु वर्तमान में परमेश्वर के वासल राजा होने के रूप में अपने शासन में कर रहा है।

जब पवित्रशास्त्र उसका वर्णन करता है जो यीशु इस समय क्या कर रहा है, तो वह अक्सर यह कहता है कि वह पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है। ये भाषा कुछ आधुनिक पाठकों को गलत दिशा की ओर ले जा सकती है। यीशु बस केवल पिता के दाहिने हाथ बैठ कर अपने पुनरागमन के समय की प्रतीक्षा ही नहीं कर रहा है; वह सिंहासन पर विराजमान है। और इसका अर्थ है कि वह अपने राज्य पर शासन कर रहा है। वह वासल राजा है जो परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है। और वह तब तक निरंतर हम पर राज्य करता रहेगा और हमारे लिए मध्यस्थता करता रहेगा और जब तक कि उसका पुनरागमन नहीं हो जाता। यीशु का शासन प्रमाणित करता है कि वह पाप और मृत्यु पर जयवंत है, और यह उसके लोगों को जीवन की प्रत्येक समस्या के बीच निरंतर राहत प्रदान करता है।

> पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है। यह एक ऐसी मानवरूपी ईश्वरत्व अभिव्यक्ति है जो यह दर्शाती है कि मसीह ने कलीसिया और ब्रह्मांड के शासन की बागडोर को प्राप्त कर लिया है। उसके स्वर्गारोहण के समय, उसे उस महिमा में सहभागी बनाया गया जो उसके साथ साथ चलती है। परंतु उसके विराजमान होने का उल्लेख यह संकेत नहीं करता कि यीशु विश्राम के एक स्थान पर चढ़ गया। उसने हमारे राजा और भविष्यद्वक्ता और याजक के रूप में अपना कार्य निरंतर जारी रखा है।
>
> — रेव्ह. जिम मैपल्स

हम ऊँचे पर उठाए गए मसीह के रूप में उसकी भूमिका के तीन छोटे-छोटे पहलुओं के आधार पर उसके उन कार्यों के बारे में बात करेंगे जिन्हें यीशु अपने स्वर्गीय शासन के दौरान करता है : पहला, उसका भविष्यद्वाणीय शब्द और आत्मा। दूसरा, पिता के सामने उसकी याजकीय मध्यस्थता। और तीसरा, अपने लोगों पर उसका राजकीय शासन। आइए पहले उसके भविष्यद्वाणीय शब्द और आत्मा को देखें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

शब्द और आत्मा

जैसा कि हम प्रेरितों के काम 2:33 में देखते हैं, यीशु द्वारा भविष्यद्वाणीय सेवकाई को कार्य में लाने के कई तरीकों में पहला तरीका कलीसिया के दान के रूप में पवित्र आत्मा को भेजना था। प्रेरितों के काम 2 में वर्णन किया गया है कि जब आत्मा पहली बार उतरा, तो उसके साथ आग की फटती हुई जीभें दिखाई दीं, बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ और जगह-जगह फैले यहूदियों की भाषाओं में परमेश्वर की बड़ी स्तुति के स्वर सुनाई दिए। यह भविष्यद्वाणीय कार्य था क्योंकि पवित्र आत्मा ने कलीसिया को संसार में यीशु के भविष्यद्वाणीय गवाह के रूप में सामर्थ्य से भरा। पतरस ने स्पष्ट किया कि इन चिह्नों ने योएल 2 में की गई भविष्यद्वाणी को पूरा कर दिया कि अंत के समय में आत्मा सेवकाई के लिए अपने सभी विश्वासयोग्य लोगों को सामर्थ्य देगा।

पिन्तेकुस्त के दिन से यीशु आत्मा को भविष्यद्वाणीय रूप में कलीसिया की सेवा करने के लिए निरंतर भेजता रहा है, यद्यपि पिन्तेकुस्त की असाधारण अभिव्यक्तियाँ सामान्य रीति से बहुत अलग रही हैं। शायद सबसे सामान्य उदाहरण यह है कि वह प्रकाशन और विचार प्रदान करने के लिए अपने आत्मा को तब भेजता है जब हम पवित्रशास्त्र को पढ़ते हैं।

यीशु के शासन के दौरान उसकी भविष्यद्वाणीय सेवकाई में पवित्रशास्त्र की प्रेरणा भी सम्मिलित है। उसने आत्मा को भेजा कि वह अपने लोगों के लिए मसीह के त्रुटिरहित वचन को लिखने के लिए प्रेरितों को प्रेरित करे, जैसा कि हम 2 तीमुथियुस 3:16-17 और 2 पतरस 3:15-16 में पढ़ते हैं। और यीशु हमारे लिए पवित्रशास्त्र को बचाए रखने के द्वारा और सेवकों को दान देने के लिए पवित्र आत्मा को भेजने के द्वारा अपनी कलीसिया के प्रति निरंतर सेवकाई कर रहा है, ताकि वे अपनी सभाओं में प्रचार कर सकें और खोए हुओं को सुसमाचार सुना सकें, जैसा कि हम फिलिप्पियों 1:14, 1 थिस्सलुनीकियों 2:13 और इब्रानियों 13:7 जैसे स्थानों में देखते हैं।

अपने भविष्यद्वाणीय शब्द और आत्मा के अतिरिक्त यीशु के शासन में उसकी याजकीय मध्यस्थता भी सम्मिलित है।

मध्यस्थता

अपने स्वर्गारोहण के समय, यीशु ने अपने लोगों के पापों के प्रायश्चित के बलिदान के लिए अपना लहू पिता को चढ़ा दिया। यह कार्य दोहराया जाने वाला नहीं है। परंतु इसके लाभों - जैसे क्षमा, शुद्धता और चंगाई - को निरंतर रूप से हमारे जीवनों पर लागू किया जाना चाहिए। अंत में, हम नए स्वर्ग और पृथ्वी पर असीमित शुद्धता, स्वास्थ्य और समृद्धि का आनंद लेंगे। परंतु इसी दौरान यीशु पिता के सामने हमारे लिए मध्यस्थ का कार्य करता है, जिसमें वह पिता से विनती करता है कि वह इस पृथ्वी पर हमारे जीवनों के दौरान उन आशीषों के एक भाग को हम पर लागू करे। उसकी मध्यस्थता का उल्लेख इब्रानियों 7:25-26; 9:11-26 और 10:19-22 में और साथ ही साथ 1 यूहन्ना 2:2 जैसे अनुच्छेदों में किया गया है।

> हमारे याजक के रूप में मसीह द्वारा अपने पूरे कार्य को प्रस्तुत करने में दो पहलू सम्मिलित हैं। इसमें उसका हमारे लिए अपने जीवन को दे देना सम्मिलित है, जिसे हम क्रूस के आधार पर सोचते हैं - वह वहाँ हमारे विकल्प के रूप में जाता है; वह हमारा स्थान ले लेता है। वह हमारे पापों को अपने ऊपर ले लेता है, और हमारे लिए उसका पूरा मूल्य चुका देता है। याजक वह व्यक्ति भी था जो लोगों के लिए मध्यस्थ का कार्य करता था, जो कि बिचवई था, अर्थात् परमेश्वर और उसके लोगों के बीच का व्यक्ति, जो उनके लिए प्रार्थना करने वाला और उनका प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति था। मसीह दोनों ही कार्यों को करता है। ऐसा नहीं है कि उसका क्रूस पर किया गया पूरा नहीं हुआ है और उसका मध्यस्थता का याजकीय कार्य कार्यरत नहीं है। नहीं। उसका क्रूस का कार्य पूरा हो चुका है। वह

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> हमारा विकल्प है, हमारा प्रतिनिधि है, तौभी वह हमारे लिए लगातार प्रार्थना करता है, हमारे लिए मध्यस्थता करता है। वह ऐसा क्यों करता है? इसलिए नहीं कि उसका क्रूस प्रभावरहित है, परंतु इसलिए कि वह अपने कार्य को निरंतर रूप से हम पर लागू कर रहा है। हम पाप करते रहते हैं; हम अभी तक महिमामय अवस्था में नहीं पहुंचे हैं। उसने हमारे लिए जो कुछ पिता के समक्ष किया है उसके आधार पर निरंतर याचना करता रहता है। वह आत्मा के द्वारा उन तरीकों में निरंतर प्रार्थना करता है जिनमें हम जानते भी नहीं हैं कि कैसे प्रार्थना करें। और वह इसे हमारे मध्यस्थ के रूप में, हमारे बिचवई के रूप में, अर्थात् एक ऐसे व्यक्ति के रूप में करता है जो हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू में हमारा प्रतिनिधित्व करता है और वह ऐसा हमारे बलिदान और मध्यस्थ के रूप में करता है।
>
> — डॉ. स्टीफन वैलम

दु:खद रूप में, बहुत सारे विश्वासी इस झूठे प्रभाव में कार्य करते हैं कि जब वे पाप करते हैं, तो वे परमेश्वर के सामने निसहाय रूप में अपनी ही योग्यता के आधार पर खड़े होते हैं, और उनके पास उनकी असफलताओं का कोई उत्तर नहीं है। परंतु अद्भुत सच्चाई यह है कि जैसे मसीह ने क्रूस पर हमारे पापों का लिए मूल्य चुका दिया है, वह अब स्वर्गीय पिता के सामने हमारे लिए मध्यस्थता करता है, और यह सुनिश्चित करता है कि पिता हमें क्षमा करता और आशीषें देता रहेगा। हम परमेश्वर के स्वर्गीय न्यायालय में कभी अकेले नहीं होते, क्योंकि यीशु हमारे बदले में निरंतर प्रार्थना कर रहा है।

> यीशु के पास एक सतत, व्यक्तिगत, और संबंधात्मक भूमिका है जिसे वह हमारे जीवनों में हमारे अधिवक्ता या वकील, हमारे मध्यस्थ, हमारे प्रतिनिधि के रूप में निभा रहा है। वह हमारा अधिवक्ता है जो प्रतिदिन और निरंतर रूप से महान न्यायी के सामने जाता है और हमारे मुकद्दमे के लिये याचना करता है। अच्छी खबर यह है कि अपने प्रायश्चित के बलिदानी कार्य के कारण वह कभी कोई मुकद्दमा नहीं हारता। हमारे महान महायाजक के रूप में मध्यस्थ होने की अपनी भूमिका में वह हमारे लिए किए गए अपने सिद्ध और पूर्ण कार्य की अपील सदैव करता रहता है, और यह सर्वदा सफल होता है, वह सर्वदा प्रभावशाली है।
>
> — डॉ. के. ऐरिक थोनेस

यीशु के वचन और आत्मा और मध्यस्थता को मन में रखते हुए, आइए राजा के रूप में उसके राज्य की ओर मुड़ें।

राज्य करना

यीशु के निरंतर चलने वाले राज्य में आंशिक रूप से कलीसिया को चलाना शामिल है, जिसका वर्णन बाइबल इफिसियों 5:23-29 जैसे स्थानों में उसकी दुल्हन के रूप में और उसकी देह के रूप में करती है, जैसा कि हम 1 कुरिन्थियों 12:29 27 में देखते हैं।

दाऊद के पुत्र और वारिस के रूप में, यीशु राष्ट्रों या जातियों पर भी राज्य करता है, और उन्हें अपने धर्मी राज्य और प्रशासन के अधीन लाता है। इस विचार को हम मत्ती 28:19-20; 1 कुरिन्थियों 15:24-28 और प्रकाशितवाक्य 22:16 में विकसित होता हुए देखते हैं।

इससे बढ़कर, परमेश्वर के सटीक प्रतिनिधि और पुनर्स्थापित मनुष्यजाति के सच्चे स्वरूप होने के रूप में यीशु पूरे अधिकार के साथ सारी सृष्टि पर प्रभु के रूप में राज्य करता है, जैसा कि हम इब्रानियों 2:7-8 में देखते हैं।

और इससे भी बढ़कर, यीशु इतना ऊँचा उठाया गया है कि उसके पास अधिकारियों और शक्तियों, जैसे स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं पर भी पूरा अधिकार है। हम इसे रोमियों 8:38-39; और कुलुस्सियों 1:16 में और 2:15 में देखते हैं। सुनिए किस प्रकार पौलुस ने यीशु के राजकीय राज्य को फिलिप्पियों 2:9-11 में सारगर्भित किया है :

> इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया और उसको वह नाम दिया जो सब नामों से श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हरेक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 2:9-11)।

यीशु सब पर राज्य करता है - कलीसिया, जातियों, सृष्टि और स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं के आत्मिक संसार पर। यह आवश्यक नहीं है कि उसका राज्य हमें हमेशा समझ आए। परंतु वह परमेश्वर की गुप्त योजना के अनुसार राज्य करता है। बाइबल हमें आश्वस्त करती है कि सब पर मसीह के राज्य के कारण उसके अनुयायियों के पास डरने का कोई कारण नहीं है। हमारी अंतिम विजय सुनिश्चित है। हमारे साथ ऐसा कुछ भी घटित नहीं हो सकता जो उसके नियंत्रण और अधिकार से परे हो। हर वह वस्तु जिसका अस्तित्व है, वह उसके अधिकार और सामर्थ्य के अधीन है - संपूर्ण ब्रह्मांड के कार्य करने से लेकर छोटे से छोटे कण के कार्य तक। और अंत में, पृथ्वी के सारे राजा और लोग, और सारे आत्मिक प्राणी उसकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे और उसके सामने घुटने टेकेंगे।

यीशु के पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और शासन का अध्ययन कर लेने के बाद, अब हम उसके भविष्य के इस पहलू की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं कि मसीह के रूप में यीशु क्या करेगा : उसका दृश्य पुनरागमन।

पुनरागमन

नया नियम सिखाता है कि क्योंकि यीशु ही मसीह है, इसलिए वह इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को पूर्ण करने के लिए अपनी महिमामय देह में दृश्य रूप में वापस आएगा। यीशु का पुनरागमन मसीही विश्वास में एक मुख्य शिक्षा है, और इसे प्रेरितों के काम 1:11; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18; 2 थिस्सलुनीकियों 1:5-10, और 1 कुरिन्थियों 15:23 में सिखाया गया है।

हम यीशु के अंतिम आगमन के बारे में अपने विचार विमर्श की रचना उन दो कार्यों को देखने के द्वारा करेंगे जिन्हें वह पूरा करेगा : सारी आत्माओं और मनुष्यजाति का उसका न्याय; और सृष्टि का नवीनीकरण। आइए सबसे पहले आत्माओं और मनुष्यजाति के न्याय को देखें।

न्याय

मसीह और राजा होने के रूप में यीशु की एक भूमिका अंत के दिन में न्यायी के रूप में कार्य करना है, जिसमें वह प्रत्येक स्वर्गदूत, दुष्टात्मा और मनुष्य को उनका प्रतिफल देगा। जैसा कि यीशु ने स्वयं मत्ती 25:31-46 में कहा है, प्रत्येक मनुष्य जो मर गया है वह जी उठेगा, और तब सारी मनुष्यजाति का उनके कार्यों के आधार पर न्याय होगा। जिन्होंने भले कार्य किए हैं उन्हें अनंत, धन्य जीवन का पुरस्कार मिलेगा। परंतु जिन्होंने बुरे कार्य किए हैं, उन्हें अनंत यातना के लिए दोषी ठहराया जाएगा। इस न्याय का

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उल्लेख यूहन्ना 5:22-30; प्रेरितों के काम 10:42 और 17:31 और 2 कुरिन्थियों 5:10 जैसे स्थानों में भी किया गया है।

अब बाइबल निसंदेह यह शिक्षा भी देती है कि लोग भले कार्य तभी कर सकते हैं जब पवित्र आत्मा सामर्थ्य के साथ उनमें वास करता है। और यदि यह बात नहीं होती कि विश्वासी मसीह में धर्मी ठहराए गए हैं, तो उनका भी कोई महत्व नहीं होता। विश्वासियों में अपने में ऐसा कुछ भी नहीं है जो उन्हें अविश्वासियों से श्रेष्ठ बनाता है। जैसा कि पौलुस ने इफिसियों 2:8-10 में लिखा है :

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है - और यह तुम्हारी ओर से नहीं है - वरन् परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। क्योंकि हम उसके बनाए हुए है, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया (इफिसियों 2:8-10)।

अपने में सारी मनुष्यजाति परमेश्वर के सामने दोषी है। परंतु उसके अंतिम न्याय में, हममें से जो मसीह में विश्वास करते हैं, उनकी गिनती ऐसी होगी कि वे मसीह की मृत्यु में अपने पापों में मर चुके हैं। इसलिए दोषी ठहरने की अपेक्षा हमें उन भले कार्यों का पुरस्कार दिया जाएगा जो परमेश्वर ने हमारे द्वारा किए हैं।

अपनी धन्य अवस्था में हम मृत्यु के डर से पूरी तरह स्वतंत्र होंगे। हमारी महिमामय देह बिल्कुल वैसी ही होगी जैसी कि यीशु की है। और हम सर्वदा शांति और खुशहाली के साथ रहेंगे, और दोष, भ्रष्टता और पाप की उपस्थिति से मुक्त होंगे। इन सबसे बढ़कर, हम परमेश्वर और अपने उद्धारकर्ता को आमने सामने देखेंगे, और उसके अनुग्रह में विश्राम करेंगे।

हमारे पुरस्कार के एक भाग के रूप में हमें नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में अधिकार दिया जाएगा, ताकि हम उन पर मसीह के साथ राज्य करें। हम इसे रोमियों 8:17; और 2 तीमुथियुस 2:12 में देखते हैं। और इस अधिकार को क्रियान्वित करने का एक पहला तरीका स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं का न्याय करने के लिए यीशु के साथ जुड़ने के द्वारा होगा, जैसा कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 6:3 में सिखाया है। इसका परिणाम मनुष्यजाति पर किए गए न्याय के सदृश होगा। धर्मी स्वर्गदूतों को पुरस्कार मिलेगा, और बुरी दुष्टात्माओं को दोषी ठहराया जाएगा, जैसा कि हम मत्ती 25:41 में पढ़ते हैं।

आत्माओं और मनुष्यजाति के न्याय की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, आइए सृष्टि के नवीनीकरण की ओर मुड़ें जो यीशु के पुनरागमन पर ही होगा।

नवीनीकरण

जैसा कि पौलुस ने रोमियों 8:19-22 में शिक्षा दी है, जब परमेश्वर ने आदम के पाप के प्रत्युत्तर में पृथ्वी को श्राप दिया, तो इसने पूरी सृष्टि को प्रभावित कर दिया। फलस्वरूप संपूर्ण ब्रह्मांड भ्रष्टता की अधीनता में आ गया। परंतु जैसा कि हम रोमियों 8:21 और प्रकाशितवाक्य 22:3 में पढ़ते हैं, जब यीशु का पुनरागमन होगा तो वह सृष्टि से पाप और मृत्यु के बंधन को हटा देगा। तब हम एक सिद्ध और भली पृथ्वी को प्राप्त करेंगे और उस पर राज्य करेंगे जो कि पहली सृष्टि से भी उत्तम होगी। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने भरपूर भोजन, लोगों और जानवरों के बीच शांतिपूर्ण मेल, और परमेश्वर के प्रति आनंदपूर्ण प्रार्थना और सेवा के आधार पर इस पुनर्स्थापित पृथ्वी को दृश्यात्मक रूप से देखा था। हम इसे यशायाह, यिर्मयाह और जकर्याह की पुस्तकों में देखते हैं। सृष्टि के इस नवीनीकरण के लिए सबसे पहले इस संसार को आग से शुद्ध किए जाने की आवश्यकता होगी, जैसा कि प्रेरित पतरस ने 2 पतरस 3:10-13 में प्रकट किया है। परंतु इसका परिणाम अद्भुत होगा। जैसा कि 2 पतरस 3:13 में लिखा है :

> पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी। (2 पतरस 3:13)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> नए स्वर्ग और नई पृथ्वी का जो चित्र हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पाते हैं, वह यह है कि यह एक वाटिका भी होगी और एक नगर भी होगा। वहाँ पर ऐसे वृक्ष हैं जो भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष और विशेष तौर पर जीवन के वृक्ष जैसे हैं। परंतु वह एक बड़ा नगर भी है। एक बड़ा नया यरूशलेम स्वर्ग से उतरता है जिसमें से एक नदी बह रही है, जो वापस वाटिका की ओर चली जाती है। अतः वहाँ वाटिका की सारी खुशियाँ और आकर्षण होगा, परंतु सभी तरह की जटिलताओं, सभी तरह की सभ्यताओं के बिना, जिनकी आप एक नगर में अपेक्षा करते हैं। और हम इसकी बाट जोहते हैं। वहाँ पर कोई आपदा नहीं होगी। अब, मैं सोचता हूँ कि प्रकृति निरंतर इस बात का शक्तिशाली तरीके से प्रदर्शन करती रहेगी कि परमेश्वर कौन है और हो सकता है कि वहाँ पर आकाश और पृथ्वी में परमेश्वर की सामर्थ्य के प्रभावशाली महान कार्य प्रकट हों, परंतु वहाँ कोई आपदा नहीं होगी क्योंकि वहाँ कोई दुःख नहीं होगा, वहाँ पर कोई उदासी नहीं होगी और परमेश्वर इन सबसे अपने लोगों की रक्षा करेगा। इसलिए व्यवहारिक तौर पर कहें तो, जैसे पतरस कहता है, हम ऐसे नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की बाट जोह रहे हैं जहाँ धार्मिकता वास करती है। यह सिद्ध रूप से धर्मी और सिद्ध रूप से सच्चा समाज होगा। यह कुछ ऐसा होगा कि हम सब के लिए अच्छा होगा। हमारे दुःख जो इस पृथ्वी पर है, हमारी सारी त्रासदियाँ जिनके कारण हम आज विलाप करते हैं और सही ही करते हैं, वे फिर कभी नहीं होंगी, जब हम महिमा की ओर जाएँगे, और सब कुछ ठीक कर दिया जाएगा। परमेश्वर का संपूर्ण न्याय वहाँ प्रबल होगा, और हम परमेश्वर की दया के लिए अत्यंत आभारी होंगे।
>
> — डॉ. जॉन फ्रेम

इसके बारे में इस तरह से सोचें। हम सब जानते हैं कि सृष्टि एक अद्भुत स्थान हो सकती है। यद्यपि सृष्टि अभी भी पाप के श्राप के अधीन है, फिर भी कभी-कभी हम इसकी सुंदरता से आश्चर्यचकित हो सकते हैं; हम इसकी जटिलताओं से चकित हो सकते हैं; हम उस आनंद से अभिभूत हो सकते हैं जिसे यह लेकर आती है। अब कल्पना करके देखिए कि सृष्टि पाप के श्राप के बिना, पीड़ा के बिना, बीमारी के बिना, युद्ध के बिना और यहाँ तक कि मृत्यु के बिना कैसी दिखाई देगी। कल्पना कीजिए नई सृष्टि पर रहने के आश्चर्य का जब यीशु वापस आएगा - इसकी सुंदरता का, इसकी जटिलता और आनंद का। क्योंकि यीशु ही वह मसीह है जो सब पर राज्य करता है, इसलिए उसके पास अधिकार और सामर्थ्य दोनों हैं कि वह हमारे लिए एक सिद्ध संसार बना दे, जहाँ हम सर्वदा के लिए परमेश्वर की महिमा करें और उसका आनंद लें।

मसीह यीशु के अनुयायी होने के नाते, हमारी सबसे बड़ी आशा यह है कि वह वापस आएगा और अपने राज्य की आशीषें हमें देगा। जब हम खोए हुओं को उसका सुसमाचार सुनाते हैं तो भविष्य का यह दर्शन हमें अत्यावश्यकता के भाव के साथ उसकी सेवा करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। यह हमें शुद्ध जीवन जीने के लिए उत्साहित करे, यद्यपि हम जानते हैं कि हम कभी भी अपने पापों के लिए दोषी नहीं ठहराए जाएँगे क्योंकि हम मसीह में सुरक्षित रखे गए हैं। और यह हमें उन बड़ी-बड़ी आशीषों के लिए उससे प्रेम करने और उसके प्रति आभारी रहने के लिए उत्साहित करे जिनकी उसने हमसे प्रतिज्ञा की है।

उपसंहार

यीशु जो मसीह है, पर आधारित इस अध्याय में हमने यीशु के जन्म और तैयारी, उसकी सार्वजनिक सेवकाई, उसके दु:खभोग और मृत्यु, और अंत में उसके ऊँचे पर उठा लिए जाने की समयावधियों को देखने के द्वारा पृथ्वी पर के उसके जीवन और उसकी सेवकाई के तथ्यों और महत्व का सर्वेक्षण किया है। यीशु के जीवन के ये प्रत्येक भाग हमें परमेश्वर के मसीह होने की यीशु की भूमिका के बारे में महत्वपूर्ण विचार प्रदान करते हैं।

यीशु मसीह पृथ्वी पर जीवन बिताने वाला सबसे अधिक सामर्थी और रोमांचकारी व्यक्ति रहा है। इससे भी अधिक रोमांचकारी यह है कि वह आज भी जीवित है, जो स्वर्ग के अपने सिंहासन से हमारे भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के रूप में सेवकाई कर रहा है। और यदि हम विश्वासयोग्ता से उसकी सेवा करें, तो वह हमें अपने वचन से हमें आश्वस्त करता है कि आने वाले संसार में हमारी आशीषें हमारी सबसे बड़ी आशाओं से भी कहीं बढ़कर होंगी। इस श्रृंखला के हमारे आगे के अध्यायों में हम यीशु के भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के कार्यो का विस्तार से अध्ययन करेंगे। परंतु यहाँ पर भी हम मसीह के अद्भुत चरित्र और उसकी महानता पर आश्चर्य करने और उसके प्रति अपने जीवनों को समर्पित करने के पर्याप्त कारणों को देख चुके हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।